हिम-प्रभा



कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश, शिमला



हिंदी पखवाड़ा 2022 उद्घाटन समारोह की कुछ झलकियां



कार्यालय में महिला दिवस का आयोजन

हिम प्रभा



2022

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

संदेश



चंदा मधुकर पंडित

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का सूत्र राजभाषा हिन्दी से संपूर्ण पाता है। जब हम बात करते हैं स्वतन्त्र देश की 75वीं वर्षगांठ और आजादी के अमृत महोत्सव की, तो हिन्दी का प्रभामंडल पूरे देश को प्रकाश से भर देता है। मैं आप सभी को अमृत महोत्सव की शुभकामनाएं अर्पित करती हूँ। हिंदी दिवस के अवसर पर सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

संयुक्त हिन्दी पत्रिका "हिम-प्रभा" का 91-92 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करना मेरे लिए सुखद अनुभव है। हिम-प्रभा हमारे विभाग में न केवल हिन्दी के प्रचार - प्रसार में अहम् भूमिका निभा रही है अपितु कार्यालय में सृजनात्मक प्रतिभा को भी पुष्पित-पल्लवित कर रही है।

कार्यालय में राजभाषा का सहज वातावरण निर्मित करने, कर्तव्यों के साथ-साथ कलात्मकता और रचनात्मकता को उड़ान देने में हिम-प्रभा सफल रही है। हिम -प्रभा की सफलता में कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों तथा संपादक मण्डल का बहुत बड़ा योगदान रहा है। पत्रिका के प्रकाशन में लेखन सामग्री एवं प्रकाशन प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सबके सतत सहयोग से यह पत्रिका और भी रोचक एवं समृद्ध बनेगी।

पत्रिका के सफल संपादन और प्रकाशन के लिए मेरी मंगलकामनाएं।।

चंदा मधुकर पंडित
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
एवं मुख्य संरक्षक "हिम-प्रभा"

संदेश



सुशील कुमार

'हिम–प्रभा' का 91–92 वां अंक सुधि पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। स्वतन्त्रता के बाद भारत को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए अपनी एक सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता महसूस हुई, जो हमारे संविधान ने 14 सितम्बर 1949 को हमें प्रदान की। राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास में व हिंदी के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हेतु अधिकारियों/ कर्मचारियों के हिंदी के प्रति रुझान का विस्तार तथा अपनी भावनाओं को हिंदी के माध्यम से अभिव्यक्त करने हेतु एक मंच प्रदान करना इस पत्रिका का उद्धेश्य है।

कार्यालय के सदस्यों के राजभाषा के प्रति लगाव और उनकी भावनाओं को अभिव्यक्ति देने और उनके आदान–प्रदान में हिंदी पत्रिका का अहम योगदान रहता है। हमारी पत्रिका 'हिम–प्रभा' के माध्यम से कार्यालय के सेवारत/सेवानिवृत कार्मिकों और उनके परिवार के सदस्यों के लेख/कविताएं/संस्मरण/चित्र इत्यादि हमें इन रचनाकारों के कृतियाँ/ अनुभव पत्रिका के पाठकों के साथसांझा करने का अवसर देता है।

मुझे उम्मीद है कि हमारी पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा में कार्यालय कार्य करने और आत्मीयता से राजभाषा से जुड़ने की प्रेरणा मिलेगी जिससे राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति और निरंतरता को बनाए रखने के उद्देश्य की सार्थकता सिद्ध होगी।

इस शुभ अवसर पर आइए संकल्प लें कि हमारे सामूहिक सार्थक और निरंतर प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त करेंगें और हिंदी भाषा का प्रयोग कर इसके प्रचार–प्रसार को नया आयाम देंगें।

मैं पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों व रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सुशील कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
एवं संरक्षक हिम प्रभा

हिम प्रभा

स्वत्वाधिकार :	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हिमाचल प्रदेश, शिमला
प्रकाशन :	हिम – प्रभा
प्रकाशक :	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला
अंक	91–92 वां
मूल्य	राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रक :	सुयाल प्रिंटर्स, लोअर कैथू, शिमला – 171003, हिमाचल प्रदेश 0177 – 2801094
मुख्य पृष्ठ परिचय :	कार्यालय प्रधान महालेखाकार, हिमाचल प्रदेश

निवेदन

सम्माननीय रचनाकारों से रचनाएं भेजते समय निम्नलिखित नियमों का पालन करने का विनम्र अनुरोध है: –

रचनाएं दो प्रतियों में प्रेषित की जाएं जो स्पष्ट तथा सुवाच्य हों।

प्रकाशनार्थ रचनाएं हिन्दी कक्ष, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हिमाचल प्रदेश, शिमला में उपलब्ध कराई जाएं।

अस्वीकृत रचनाएं लौटाने का प्रावधान नहीं है। अत: रचनाओं की मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।

भविष्य में भी आपकी रचनाओं की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक मण्डल

पत्रिका प्रकाशन में सहयोगी सदस्य

मुख्य संरक्षक

श्रीमती चंदा मधुकर पंडित
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संरक्षक

श्री सुशील कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

अध्यक्ष संपादक मंडल

श्री प्रतीक पाटिल
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संपादन एवं आकल्पन

श्रीमती अनुराधा सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी अनुभाग, लेखापरीक्षा)
सुश्री समता खानचंदानी
(कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, लेखापरीक्षा)

संपादन सलाहकार समिति

श्री दिनेश शर्मा वरिष्ठ लेखा अधिकारी
श्रीमती सूरज नेगी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
श्री सोम नाथ सहायक पर्यवेक्षक (लेखा व हकदारी)

प्रकाशित रचनाओं में रचनाकारों के
निजी विचार हैं।

सम्पादक मण्डल का रचनाकारों के
विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	रचनाकार का नाम	पृष्ठ
1.	आजादी का अमृत महोत्सव	वासु जल	1
2.	हिंदी दिवस कैसे मनाएं	सोमनाथ सोनी	2
3.	कैसे दूं बिदाई	समता खानचंदानी	3–5
4.	माँ	कल्पना	6
5.	मुस्कुराहट जिन्दगी का सबसे अनमोल तोहफा	सोनिया शर्मा	7
6.	कुछ मेरा भी दोष	अजय सिंह	8
7.	मै कौन हूँ	कल्पना	9
8.	नई शिक्षा नीति	शैलेश त्रिपाठी	10–12
9.	नारी की व्यथा	अनुराधा सूद	13–14
10.	धीरे से	छाया सिंह	15
11.	सिंगापुर	एन. के. जुल्का	16–17
12.	पैसे की औक़ात	बलराम	18
13.	कुछ बूंद आचमन	पूजा	19
14.	परीक्षा की तैयारी कैसे करें	शशी जुल्का	20–22
15.	कोयल –चिड़िया रानी	कीर्ति चतुर्वेदी	23
16	मैं भारत हूं, झुकता नहीं हूं	दया सागर.	24–25
17.	मेरे देश के किसान	मन्निका कश्यप	26
18.	शासकीय सेवा में मेरी ज्वाइनिंग	अनुराधा सूद	27–28
19.	यात्रा	विजय लक्ष्मी	29
20.	शिक्षक दिवस	मरियम अकरम	30
21.	कामयाबी को अहंकार से बचाएं	कीर्ति चतुर्वेदी	31
22.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार	सुनीता देवी	32
23.	योग का हमारे जीवन में महत्व	कुलदीप सिंह	33
24.	मेरा वजूद	सुनीता ग्रेवाल	34–35
25.	यात्रा के कुछ कटु–सुखद अनुभव	अनुराधा सूद	36–37
26.	प्रकृति	समता खानचंदानी	38
27.	वर्ष 2020–21 में सेवानिवृत हुए अधिकारी/कर्मचारी		39–40
28.	हिम–प्रभा 2021 पर प्रतिक्रियाएं		42–46

आज़ादी का अमृत महोत्सव



वासु जल
पुत्र श्रीमती अनुराधा सूद
व.ले.प.अ.

राष्ट्र के गौरव और सम्मान का प्रतीक है तिरंगा,
हर देशभक्त की आन-बान और शान है तिरंगा।

श्वेत-हरित-केसरिया तीन रंगों से बना यह ध्वज,
साहस, शांति, सुख-समृद्धि का प्रतीक है तिरंगा।

निरंतर प्रगति का प्रतीक चक्र, मध्य में इस के शोभायमान है,
हर भारतीय का अभिमान और पहचान है तिरंगा।

अनगनित थे इस पर मिटने वाले, अनगनितों ने लहू बहाया है,
सब पर ऋण शेष है उनका, जिस ने नमक इस देश का खाया है।

बारम्बार नमन है उन वीरों को, जिन्होंने प्राणोत्सर्ग किए,
तेरी खातिर मिट गए वे सब, उन मतवालों के बलिदानों को याद करें।

चंद निजी ख्वाईशों ने ही, पहले हमें गुलाम बनाया,
सबक ले अतीत से, सब का अब साथ हो, हर जन का यह प्रयास हो।

देश-प्रेम की अलख जगाने की,कसम अब खाई है,
देश का विकास हो, विश्व में ऊंची तेरी शान हो।

है दम नहीं दुश्मन में, तुझ तक पहुँचने नहीं देंगे,
नापाक इरादे वालो तुम्हें, सुपुर्दे खाक कर देंगे।

सहभागिता से अब सब ने मिल, श्रेष्ठ भारत बनाना है,
दुनिया को सुपथ दिखाना है, भारत को विश्व गुरु बनाना है।

पचहत्तर वर्ष हो गए अब, देश को आज़ाद हुए,
स्वदेशी को अपनाना है, भारत को आत्मनिर्भर बनाना है।

शहीदों की पुण्य स्मृति में, आओ सब हम मिल कर दीप जलाएँ,
आज़ादी का अमृत महोत्सव है यह, आओ सब जन मिलकर इसे मनाएँ।

हिंदी दिवस कैसे मनाएं ?

सोमनाथ सोनी,
सहायक पर्यवेक्षक
(हिंदी कक्ष)

हर 14 सितम्बर को भारत सरकार हिंदी दिवस मनाती है। नेता लोग हिंदी को लेकर अच्छे–खासे भाषण भी झाड़ देते हैं। लेकिन हिंदी का ढर्रा जहां था, वहीं आकर टिक जाता है। भारत की अदालतों, ससंद और विधान सभाओं, सरकारी काम–काज में, पाठशालाओं और विश्वविधालयों में सर्वत्र अंग्रेजी का बोलबाला बढ़ता जा रहा है। अब तो आजादी के 75 साल में अंग्रेजी की गुलामी हमारे घर–द्वार बाजार में भी छा ती चली जा रही है। हम लोग इस गुलामी के लिए सरकारों को दोषी ठहरा कर संतुष्ट हो जाते हैं, लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि इस मामले में हमारी भूमिका क्या रही है? जनता की भूमिका क्या रही है? यदि भारत की जनता जागृत रही होती तो यह भाषाई गुलामी कभी की दूर हो जाती। फिलहाल हम सरकार को छोड़े और यह सोचे कि हिंदी के लिए भारत की जनता क्या–क्या कर सकती है इस संबंध में मेरे कुछ सुझाव निम्नानुसार हैं:–

1. सारे भारतवासी संकल्प करें कि वे आज से ही अपने हस्ताक्षर हिंदी या अपनी मातृ भाषा में ही करेंगें। सारे कानूनी दस्तावेजों और बैंक के खातों में अब आगे से स्वभाषा में ही हस्ताक्षर होंगें।

2. अपने–अपने शहर और गांव में दुकानों और घरों पर लगे सभी नामपट्ट स्वभाषा में होंगे। यदि किसी अन्य भाषा में लिखना हो तो लिखते रहें लेकिन स्वभाषा उपर और बड़ी होनी चाहिए। अंग्रेजी नामपट्ट लोग स्वतः न हटाएं तो उन्हें पोतने का अभियान चलाऐं।

3. लोग शादी तथा अन्य कार्यक्रमों के अपने निमंत्रण स्वभाषा में छपवाएं।

4. दुकानदार और कारखानेदार अपनी निर्मित चीजों पर विक्रय चिन्ह और अन्य विवरण ग्राहक–भाषा में अंकित करें।

5. सारे नेताओं से अनुरोध किया जाए कि वे संसद और विधानसभा में अपने भाषण स्वभाषा में दें। लोक–प्रतिनिधि लोक भाषा का ही प्रयोग करें। सारे कानून हिंदी में बनें।

6. बैंकों और दुकानदारों को चाहिए कि वे अपनी पावती, रसीद और चेक वगैरह स्वभाषा में छपवाएं।

सरकारों से आग्रह किया जाए कि वे अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों पर पाबंदी लगाएं। अकेली अंग्रेजी नहीं, कई विदेशी भाषाएं हमारे छात्रों को पढ़ने की सुविधा दी जाए।

कैसे दूं बिदाई



समता खानचंदानी
(क.हि.अ.)

वो चली गई।उनके होने और न होने के मायने इस चराचर जगत के हर सूक्ष्म कण में व्याप्त है। झूठ, फरेब, मतलब, लालच और अविश्वास से भरी इस कठोर, कड़वी, विक्षिप्त दुनिया को उन्होंने थामा हुआ था। ऐसे... जैसे तसल्ली हो कि पवित्रता है...एक स्वर, एक आलाप... हमें पागलपन के इस मायाजाल से खींच कर उस स्वर्ग में ले आएगा, जहां दिल धड़कते है..जज़्बात पनपते है...जहां इत्मीनान है.. भरोसा है.. राहत है.. सुकून है.. और मन सच्चे है।अब वो नहीं है तो हमें इंसानियत का अहसास कौन कराएगा?

उनके लिए लिखना मुश्किल है। उन्हें जाने देना और भी मुश्किल। सिर्फ संगीत रसिक सुनकार ही नहीं वरन हर आमो-ख़ास के भीतर वो है। जिंदगी के हर शेड्स... हर मूड ... हर हरकत में वो है।उन्हें कैसे दूं बिदाई....

इन्दौरी होने की एक ख़ुशी यह भी है, कि इन्दौर, मध्य प्रदेश मुझे उस विराट शख्सियत से जोड़ता है जिसे दुनिया माँ सरस्वती का अवतार मानती है। यूँ तो उनके जीवन से हर कोई वाकिफ है लेकिन कुछ न बताने का अधूरापन इस पन्ने को नहीं दे सकती। 28 सितम्बर 1929 को दीनानाथ मंगेशकर और शेवंती को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम उन्होंने हेमा रखा। हेमा से लता बनाने तक की संघर्ष गाथा कई कहानियाँ अपने में समेटे हैं। हालांकि हेमा से लता का नाम परिवर्तन तो पिता ने ही अपने नाटक के किरदार लतिका से किया था परन्तु लता का लता हो जाना आसान नहीं था। उम्र के मात्र तेरहवें वर्ष में पिता को खो देना और कंधे पर चार छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारी आ पड़ना इस सफ़र की शुरुआत थी।

सफ़र की शुरुआत हुई अभिनय से – 1942 में आई 'मंगला गौर' फिर आई 'चिमकुला संसार

(1943), माझे बाल (1944), गजभाऊ (1944), बड़ी माँ (1945), जीवन यात्रा (1946), और फिर छत्रपति शिवाजी (1952)'। गायिका के तौर पर 1947 में'आपकी सेवा' फिल्म में पहली बार पार्श्वगायन किया।'आएगा आनेवाला' गीत जब 1949 में सिने जगत में गूंजा तो उद्घोष हुआ कि वो आ गई है। अपने सात दशकों के विलक्षण सक्रिय काल में लता ने 30 भाषाओं इतने गीत गए कि 1974 में सबसे ज्यादा गीत गाने के लिए गिनिस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में उनका नाम दर्ज है। देश की आज़ादी सेअमृत महोत्सव तक का दौर उनके साथ चला है। खुली किताब के मानिंद उनकी ज़िन्दगी से सब वाकिफ है। उसे बताउंगी तो सफे कम पड़ जाएंगे... तो बात करते है उस लता की जो दैहिक नहीं थी .. लौकिक नहीं थी। उनकी आवाज ने उस वक्त देश को सांस्कृतिक एकता और भाई चारे के सूत्र में बांधा जब विभाजन की पीड़ा झेल रहा देश स्वयं को खोज रहा था। 'अल्ला तेरो नाम, ईश्वर तेरो नाम' सुनते हुए क्या आपने अल्लाह और ईश्वर अलग अलग देखे है? वो तो छोडिए क्या आपको राम, कृष्ण, शिव, गणेश का भान हुआ? नहीं ना। ये था लता इफेक्ट- परालौकिक सत्ता का एहसास उन्हें सुनते हुए बिना किसी प्रयास के अपने आप ही हो जाता था। देश भक्ति का भाव जगाने के लिए 'ऐमेरे वतन के लोगों' सुनना ही काफी है। बालकवि बैरागी के बोल और जयदेव की धुन संगीत के उफक के उस मैय्यार को न छू पाते यदि 'तू चंदा मैं चांदनी, तू तरुवर मैं शाख' को लता की आवाज़ न मिल पाती। सुनिएगा इसे .. आप ख्वामख्वाह बिक जाएगे। पानी महसूस करना हो तो 'सत्या' फिल्म का गीत 'गीला-गीला पानी' सुनिएगा, और जब बहुत अकेला महसूस कर रहे हो तो सुनियेगा 'तू जहां-जहां चलेगा, मेरा साया साथ होगा'। हर गीत नायाब.. हर सुर संगीत के सर्वोच्च शिखर के पार जाता हुआ। उनकी नाज़ुकी और मिठास के आगे हर रूपक, अलंकार, उपमान फीके... बेमानी है। उनकी इतनी सारी बातों, किस्सों का ज़िक्र करना चाह रही हूँ पर मगर सब कुछ उलझ गया सा है।

वो शख्सियत ही ऐसी थी, गोया-

' वो ज़ालिम आफ़ताब-ऐ-दोपहर है...संभल के थोड़ा थोड़ा देखना'

हर गीत उनका अप्रतिम था.. शब्द धड़कने ..सांस लेने लगते.. उनकी जुबां से निकला हर लफ्ज़ चलने-फिरने, हंसने-रोने, जीने लगता था। किस बात को कैसे महसूस करना है, उनसे सीखा।हाँ, आवाज़ वजूद भी गढ़ सकती है। यदि हैरी पोर्टर फेंटसी सच होती तो यकीनन वो इस दुनिया की सबसे काबिल.. सबसे शक्तिशाली जादूगरनी होती। यदि नादब्रह्म सच है... और जब ये धरा ... ये गगन.. ये अंतरिक्ष कुछ न बचेगा... सिर्फ ध्वनि शेष रहेगी... तो नि:संदेह वो लता स्वर ही होगा।

भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में वो महान सांस्कृतिक किरदार थी। उनकी कला देश काल रीति की परिधि में न आती थी। वो भारत में भी लता थी.. दूसरे देशों में भी लता, परन्तु भारत की स्वर-कोकिला के रूप में। बाहर के देशों में वो हमारी सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक थी।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखे तो मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम की तरह उन्होंने परिवार को स्वयं से ऊपर रखा। हृदयनाथ, आशा, उषा और मीना की परवरिश को ही जीवन का केंद्र मानते हुए गृहस्थ आश्रम का त्याग किया। उनके गायन की रेंज और उनमें सभी नौ रसों की अनुभूति द्वापर के श्री कृष्ण का भान कराती है। उनका सादा सलीका,आवाज़ का ठहराव ... गंभीरता... विरागी शिव की स्मृति में ले जाती है और अपने अधिकारों के लिए रण में उतरती लता माँ शक्ति का रूप जान पड़ती है। उनकी सांगीतिक यात्रा दैवीय अवतार के सदृश्य है।

ये भी उन्हीं का असर है कि मुझ जैसी अगढ़ कलमकार लिखने की जुर्रत कर रही है। बकौल 'अज्म वहज़ाद'-

"एक वज़ाहत के लम्हे में मुझ पर ये अहवाल खुला
कितनी मुश्किल पेश आती है अपना हाल बताने में!"

तो आहात हूं... उनके निर्वाण पर...
मगर ये सुकून भी है
कि अपनी पूरी ज़िन्दगी जी कर वो इस जहाने- ख़राब से मुक्त हुई।



28 सितम्बर 1929 – 6 फरवरी 2022

माँ



सुश्री कल्पना
रू.ले.प.अ.

आज सुबह जब घर से निकल रही थी,
लगा पीछे से कोई आवाज़ आई...
पलटकर देखा तो कोई नही था,
माँ तेरी बहुत याद आई...
तुम थी तो घर से भूखा नही निकलने देती थी ,
क्या खाया कब खाया सबकी ख़बर लेती थी,
अब तो कई बार बिना कुछ खाए सुबह से शाम हो जाती है,
माँ तेरी बहुत याद आती है...
कैसे तुम मेरी छोटी बड़ी हर चीज़ का ध्यान रखती थी,
दो मिनट अगर घर देर से पहुचूँ तो कैसे दरवाज़े पर खड़ी होकर राह तकती थी,
अब तो चाहे रात - रात भर घर ना आऊँ कोई कुछ कहने वाला नहीं है,
गुस्सा होते हुए भी खाना गर्म कर के देने वाला नही है,
तेरे गुस्से में भी कितना प्यार छिपा होता था,
तेरी डांट में भी फ़िक्र और दुलार छिपा होता था,
तू सच कहती थी... जब नहीं रहूंगी तब पता चलेगा,
आज हर घड़ी तेरी अहमियत बताती है...
माँ तेरी बहुत याद आती है...
मेरे बीमार होने पर रात भर जागती थी,
कभी डॉक्टर, कभी हकीम सबके चक्कर काटती थी,
दवाई के असर ना करने पर नज़र की डोरी लेती थी,
झाड़ फूँक पूजा पाठ सब करवाती थी,
उस बीमारी में भी अलग ही मज़ा था,



मुस्कुराहट, जिन्दगी का सबसे अनमोल तोहफा



सोनिया शर्मा
एम0 टी0 एस0

मुस्कुराहट जिन्दगी का सबसे अनमोल तोहफा होता है। मुस्कुराता हुआ चेहरा और मासूमियत से भरी मुस्कान को तो सफलता की चॉबी भी कह सकते हैं, हमारी एक मुस्कान सिर्फ हमारी ही नहीं, दूसरों के दिन की शुरूआत भी अच्छी कर देती है। हम सुबह सोकर उठे और सामने किसी का लटका हुआ चेहरा देखें तो क्या सोचेगे? सोचने से पहले आपका मस्तिष्क उसी के अनुसार कार्य शुरू कर देगा। पूरा संसार दुःख के सागर में डूबा हुआ–सा प्रतीत होगा और उसके बाद यदि सामने कोई कितनी भी अच्छी मनः स्थिति में हो, तो हमें लगेगा कि सब व्यर्थ है, बेकार है, क्योंकि हमारी ही मनस्थिति अच्छी नहीं होगी। इसलिए कार्य का चाहे कितना भी भार हमारे ऊपर हो, अपने लिए और दूसरों के लिए अपने कार्य की शुरूआत एक प्यारी सी मुस्कान के साथ करेंगे और फिर देखिये हमारे बिगड़े हुए कार्य बनने लगेंगे। सिर्फ एक मुस्कान हमारे चेहरे को आकर्षक चमक प्रदान करती हैं। जिसे हम अंग्रेजी में फेशियल ग्लो कहते हैं। मुस्कान हमारे अंदर ऊर्जा का संचार करती है। हमारे मस्तिष्क की सभी नसों का रक्त संचार बढ़ाने में मदद् करती है। हमारे रोगों से लड़ने का एक मात्र उपाय है हमारी मुस्कान। तो फिर किस बात की देर? मुस्कुराहट फैला दीजिए अपने आस–पास कभी भी हमारी जिन्दगी में कैसी भी परिस्थिति क्यों ना हो लेकिन यदि हमारे चेहरे पर मुस्कान बनी हो तो हम हर परिस्थिति का अच्छे से सामना कर सकते हैं। मुस्कुराता हुआ हर चेहरा और मासूमियत से भरी मुस्कान कौन नहीं चाहता, मुस्कुराहट तो चेहरे का नूर ही बदल देती है। मुस्कान हर एक इन्सान के दुखों का अंत कर दिल में जीने की एक नई उमंग भर देती है।

जिन्दगी में अगर किसी भी मोड़ पर सफर मुश्किल लगे और कोई रास्ता नजर ना आये तो हम दुःखी हो जाते हैं। और हमें हर कोई अजनबी नजर आता हो तब मुस्कुराओ, ये मुस्कुराहट हर सफर को आसान बना देगी तथा आप खुद को एक नयी ऊर्जा से सराबोर पायेगें।

अतः मैं यह कहना चाहती हूँ कि जिन्दगी हम जब तक जीयें हर–पल एक प्यारी सी मुस्कान के साथ जीयें, तो जिन्दगी का सफर हमें बहुत अच्छा लगेगा। मुस्कुराहट जिन्दगी का सबसे अनमोल तोहफा है।

कुछ मेरा भी दोष



अजय सिंह
डी.ई.ओ. (हिंदी कक्ष)

जीवन पथ पर फल मिले, करनी के अनुरुप
कोई पाता छांव तो, मिले किसी को धूप
नेक और अनेक में, नहीं जानते भेद
कहो आपके ज्ञान पर, करें कहां तक खेद

जेब कटी बाजार में, हुआ न तनिक उदास
रोया जब कौतवाल ने, तोड़ी उसकी आस
जीवन चौपड़ खेल सा, किस्मत के आधीन
पौ बारह होती, कभी, पड़ते काने तीन

कहो कहें क्या आपसे, तनिक न धरते ध्यान
हम कहते हैं खेत की, तुम सुनते खलिहान
जीवन की इस राह में, ऐसे मिले पड़ाव
प्रेम जताया ग़ैर ने, अपनों ने अलगाव

बड़ी बड़ाई राम की, बड़ा राम का नाम
जो इसका सुमिरन करे, बनते बिगड़े काम
कौन उन्हें क्या सीख दे, देदे कौन सलाह
होकर के मजबूर जो, चले नाश की राह

बैठा वह चुपचाप जब, लेकर कलम दवात
शब्द पृष्ठ पर नाचते, कह कह अपनी बात
गए अगर जो हार हम, दिखला मत ये रोष
कुछ तो तेरी है कमी, कुछ मेरा भी दोष



सुश्री कल्पना
स.ले.प.अ.

मैं कौन हूँ

आँख खोल के सोई थी,
खुद के सपनो में खोई थी,
खुद में खुद को खोज रही,
बस खुद के बारे में सोच रही,
मैं कौन हूँ कैसा किरदार,
प्रभाव में आऊँ या हूँ असरदार,
नासमझ हूँ या हूँ समझदार,
बेवफा हूँ या हूँ वफादार,
मैं कलाकार या कलमकार,
मैं गीत कविता या कोई कहानी हूँ,
मैं बचपन हूँ, बुढ़ापा हूँ,या मैं मस्त जवानी हूँ,
मैं सबको चाहूं या मैं सबकी चाहत हूँ,
काम ना आऊँ किसी के
या मैं सबकी राहत हूँ
मैं आफत हूँ या राहत हूँ
मैं चाहत हूँ या नाहक हूँ,
दर्द हूँ मैं या दर्द निवारक हूँ,
या मैं यूं ही हानिकारक हूँ,
मैं जरुरी हूँ या जरुरत हूँ,
या शायद बस मैं एक औरत हूँ....

नई शिक्षा नीति, 2020



शैलेश त्रिपाठी
स.ले.व.अ.

हाल ही में प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी ने नई शिक्षा नीति को लागू किया है । इसे लाने के साथ ही देश में शिक्षा पर एक व्यापक चर्चा आरंभ हो गई है। शिक्षा के संबंध में गांधी जी का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। इसी परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद का कहना था मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को स्पष्ट करना ही शिक्षा है। इन्हीं सब चर्चा के मध्य हम देखेंगे 1986 की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियाँ रह गई थीं उन्हें पूरा करने के लिए ये नई शिक्षा नीति को लाने की आवश्यकता पड़ी । साथ ही क्या यह नई शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने देखा था?

सबसे पहले 'शिक्षा' क्या है इस पर गौर करना आवश्यक है।शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया से है, परंतु अगर इसके व्यापक अर्थ को देखें तो शिक्षा समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है जिसका कोई उद्देश्य होता है औरजिससे मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाया जाता है।

गौरतलब है नई शिक्षा नीति 2020 की घोषणा के साथ ही **मानव संसाधन मंत्रालय** का नाम बदलकर **शिक्षा मंत्रालय** कर दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है।

अंतिम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में बनाई गई थी जिसमें वर्ष 1992 में संशोधन किया गया था वर्तमान शिक्षा नीतिअंतरिक्ष वैज्ञानिक के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति की रिपोर्ट पर आधारित है। नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत वर्ष 2030 तक सकल नामांकन अनुपात को 100% लाने का लक्ष्य रखा गया है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत केंद्र व राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के 6% हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।

नई शिक्षा नीतिमें 5 + 3 + 3 + 4 डिज़ाइन वाले शैक्षणिक संरचना का प्रस्ताव किया गया है जो 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चों को शामिल करता है।

- पाँच वर्ष की फाउंडेशनल स्टेज - 3 साल का - प्राइमरी स्कूल और ग्रेड 1, 2
- तीन वर्ष का प्रिपेटरी स्टेज
- तीन वर्ष का मध्य (या उच्च प्राथमिक) चरण - ग्रेड 6, 7, 8 और
- 4 वर्ष का उच्च (या माध्यमिक) चरण - ग्रेड 9, 10, 11, 12

नई शिक्षा नीति में -2020 में कक्षा -5 तक की शिक्षा में मातृभाषा / स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को अध्ययन के माध्यम के रुप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही इस नीति में मातृभाषा को कक्षा -8 और आगे की

शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है। स्कूली और उच्च शिक्षा में छात्रों के लिये संस्कृत और अन्य प्राचीन भारतीय भाषा का विकल्प उपलब्ध होगा परंतु किसी भी छात्र पर भाषा के चुनाव की कोई बाध्यता नहीं होगी।

विद्यालयों में सभी स्तरों पर छात्रों को बागवानी, नियमित रुप से खेल-कूद, योग, नृत्य, मार्शल आर्ट को स्थानीय उपलब्धता के अनुसार प्रदान करने की कोशिश की जाएगी ताकि बच्चे शारीरिक गतिविधियों एवं व्यायाम वगैरह में भाग ले सकें।

इस नीति में प्रस्तावित सुधारों के अनुसार, कला और विज्ञान, व्यावसायिक तथा शैक्षणिक विषयों एवं पाठयक्रम व पाठेयत्तर गतिविधियों के बीच बहुत अधिक अंतर नहीं होगा। कक्षा -6 से ही शैक्षिक पाठयक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल कर दिया जाएगा और इसमें इंटर्नशिप की व्यवस्था भी की जाएगी ।

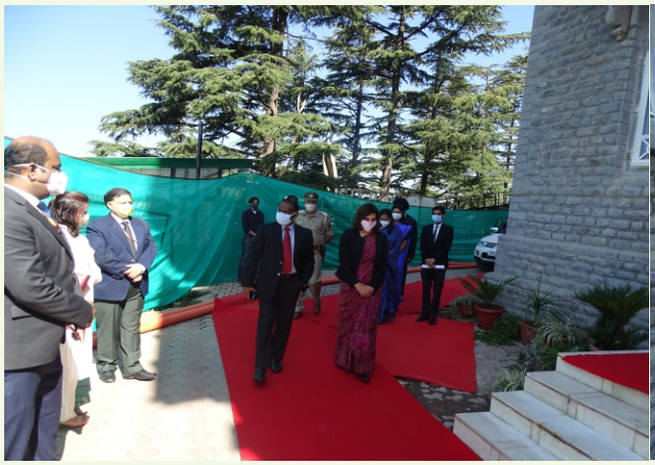
'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद' द्वारा 'स्कूली शिक्षा के राष्ट्रीय पाठयक्रम रुपरेखा' तैयार की जाएगी । छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा -10 और कक्षा -12 की परीक्षा में बदलाव किया जाएगा । इसमें भविष्य में सेमेस्टर या बहुविकल्पीय प्रश्न आदि जैसे सुधारों को शामिल किया जा सकता है। छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन केलिये मानक- निर्धारक निकाय के रुप में 'परख' नामक एक नए 'राष्ट्रीय आकलन केंद्र' कीस्थापना की जाएगी । छात्रों की प्रगति के मूल्यांकन तथा उनकोअपने भविष्य से जुड़े निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने केलिये 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' आधारित सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जायेगा।

शिक्षकों की नियुक्ति में प्रभावी और पारदर्शी प्रक्रिया का पालन तथा समय-समय पर किये गए कार्य-दर्शन आकलन के आधार पर पदोन्नती की जायगी। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा वर्ष 2022 तक ' शिक्षकों के लिये राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक' का विकास किया जाएगा । राष्ट्रीयअध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के परामर्श के आधार पर 'अध्यापक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठयचर्या की रुपरेखा' का विकास किया जाएगा। वर्ष 2030 तक अध्यापन के लिये न्यूनतम योग्यता 4-वर्षीय एकीकृत बी .एड.का होना अनिवार्य किया जाएगा।

नई शिक्षा नीति में -2020 के तहत उच्च शिक्षण संस्थानों में 'सकल नामांकन अनुपात' को 26.3% (वर्ष 2018) से बढ़ा कर 50% तक करने का लक्ष्य रखा गया है, इसके साथ ही देश के उच्च शिक्षण संस्थानों में 3.5 करोड़ नई सीटों को जोड़ा जाएगा। स्नातक पाठयक्रम में मल्टीपल एंट्री एंड एग्जिट व्यवस्था को अपनाया गया है, इसके तहत 3 या 4 वर्ष के स्नातक कार्यक्रम में छात्र कई स्तरों पर पाठयक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हें उसी के अनुरुप या प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा (1 वर्ष के बाद प्रमाण-पत्र, 2 वर्षों के बाद एडवांस डिप्लोमा, 3 वर्षों के बाद स्नातक कीतथा 4 वर्षों के बाद शोध के साथ स्नातक)। विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों से प्राप्त अंकों या क्रेडिट को डिजिटल रुप से सुरक्षित रखने केलिये एक 'एकेडिमिक बैंक ऑफ क्रेडिट' दिया जाएगा , ताकि अलग-अलग संस्थानों में छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर उन्हें डिग्री प्रदान की जा सके। नई शिक्षा नीति के तहत एम. फिल. कार्यक्रम को समाप्त कर दिया गया।

केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 21वीं सदी के भारत की जरुरतों को पूरा करने के लिये भारतीय शिक्षा प्रणाली में बदलाव हेतु नई शिक्षा राष्ट्रीय नीति 2020 को मंज़ूरी दी है अगर उसका क्रियान्वयन सफल तरीके से होता है

तो यह नई प्रणाली भारत को अग्रणी देशों के समकक्ष ले आएगी । नई शिक्षा नीति, 2020 के तहत 3 साल से 18 साल तक के बच्चों को शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 के अंतर्गत रखा गया है। 34 वर्षों पश्चात् आई इस नई शिक्षा नीतिका उद्देश्य सभी छात्रों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है जिसका लक्ष्य 2025 तक पूर्व- माध्यमिक कक्षा (3-6 वर्ष की आयु सीमा) को सार्वभौमिक बनाना है। स्नातक शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, थ्री-डी मशीन, डेटा - विश्लेषण, जैव प्रौद्योगिकी आदि के क्षेत्रों के समावेशन से अत्याधुनिक क्षेत्रों में भी कुशल पेशेवर तैयार होंगेऔर युवा की रोजगार क्षमता में वृद्धि होगी ।







कार्यालय में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक
श्री गिरीश चंद्र मुर्मू का दौरा





कार्यालय के विभिन्न खेल विजेता



कार्यालय में प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) एवं उप महालेखाकार (लेखा व हकदारी) कोविड बूस्टर डोस लगवाते हुए



कार्यालय में अग्निशमन कर्मचारी मोक ड्रिल करते हुए



श्रीमती अनुराधा सूद
व.ले.प.अ

नारी की व्यथा

छोटी थी जब...

पापा की दुलारी थी, माँ की थी लाडो रानी,

और दादा-दादी की आँखों का सुकून,

एक पहचान मिली-साक्षात देवी का रूप।

थोड़ी बड़ी हुई...

माँ की आँखों में अनजाना डर दिखने लगा,

उसकी प्यार भरी फटकार अब मिलने लगी...

'बेवजह न हंसा करो, धीरे बोलो, बड़ी हो रही हो,

दूसरे घर जाना है, गृहस्थी संभालनी है'!

फिर एक दिन...

अनजान हाथों में सौंप दी गई,

एक नई पहचान के साथ-साक्षात लक्ष्मी का रूप।

दूसरों को खुश रखने में ही अपनी खुशी के बहाने तलाशती रही।

कुछ गलत हो जाता तो ताना मिलता सास से...

'काम सलीके से नहीं सिखाया माँ ने'?

पति की बात पर कुछ राय देती तो सुनने को मिलता...

'चुप रहो, तुम कितना जानती हो'?

घर को तराशती, बच्चों को संभालती-संवारती रह गई,

इन सब के इर्द-गिर्द ही जिंदगी सिमट कर रह गई ।

उम्र ढल गई, कोशिश करती रही,

रिश्तों की डोर को निभाते,रूठो को मनाते ...

बच्चे बड़े हुए, कुछ कहना चाहा तो सुनने को मिला

'तुम इन सब से दूर रहो' ।

बुढ़ापा आ गया, लेकिन बोलने की आजादी अब भी न मिली।

बोलना चाहा तो चुप करा दी गई...

'अपनी सेहत का ध्यान रखो, तुम्हेंआराम की जरूरत है'।

अनगिनत अनकही बातें दिल की तह में दफ़न रह गई....

कई किरदार निभाते-निभाते, अपनी ही मंजिल भूल गई।

देवी, लक्ष्मी, प्यार, स्नेह, त्याग की मूर्त में ,

उलझा दी गई मेरी हस्ती, मेरा वजूद...

मुझ से उम्मीद सबको थी, पर मैं किसी से उम्मीद न कर सकी।

कोई समझेगा मुझे,यह भ्रम भी टूट गया एक दिन...

और चुपचाप ही खामोश हो गई, सदा के लिए।



छाया सिंह
लेखाकार

धीरे से

बचपन से ही मेरा जीवन, लड़ता रहा पसीने से।

संघर्षों से लड़ करके भी, हँसता रहा करीने से।।

सुबह हुई फिर शाम हुई,

दोपहर यौवन है छाया।

बचपन जो खेल खिलौनों का,

उसको मैंने यूँ आनंद में पाया।।

यौवन की अठखेली में समय भाग गया धीरे से।

बाल-बच्चों-परिवार की जिम्मेदारी में यौवन भाग गया धीरे से।।

बादल में ज्यौं छिपा चाँद,

चाँदनी रूठ गई धीरे से।

कब वृद्धावस्था आ गई ज़ाने,

यौवन सरका धीरे से।।

कितना डरपोक ये तन-मन है, सांसों को छोड़ा धीरे से।

कफन ओढ़ सोता है तब, कुछ बोल न पाया धीरे से।।

सिंगापुर

एन. के. जुल्का
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
सेवा निवृत्त

लगभग 57 लाख आबादी और 727 किलोमीटर क्षेत्रफल लेकिन व्यवस्थाओं में आगे। ऐसा देश जो अपने क्षेत्रफल के मामले में दिल्ली से भी छोटा है परन्तु जीरो क्राईम और जीरो भ्रष्टाचार के चलते देश की तस्वीर और दशा बिलकुल साफ नज़र आती है। मैं इतिहास, मनोविज्ञान और राजनीति शास्त्र का छात्र रहा हूँ। जब भी मैं विदेशों की यात्रा पर गया मैंने इन तीनों विषयों को अपनी नजर में रख कर लिखना शुरू किया। मैंने थाईलैंण्ड (पुराना नाम श्याम देश), मलेशिया (पुराना नाम मलाचा), सिंगापुर, मॉरिशस आदि देशों की यात्रा की है परन्तु सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा। जहाँ भी जाओ, अपनें देश की याद आती है और विदशों से अपनी मातृभूमि को लौटने को मन व्याकुल रहता हैं। सिंगापुर नाम से अभिप्राय है सिंग (सिंह, शेर) और पुर से अभिप्राय है शहर अर्थात यह शेरों का शहर है। इसकी जनसंख्या में ज्यादा भारत और चीन के लोग रहते हैं। लेकिन उनमें प्रेमभाव इतना है कि उन्हें कोई अलग नहीं कर सकता। सिंगापुर में दो राष्ट्रपति दक्षिण भारत के रह चुके हैं। राष्ट्रपति कहीं का भी हो लेकिन जनसंख्या से किसी प्रकार मतभेद नहीं करते। यहॉ भी अनेकता में एकता है। सिंगापुर और मॉरिशस को लिटिल इन्डिया भी कहा जाता है। मॉरिशस में तो 70 प्रतिशत हिन्दू ही बसे हुए हैं और यह सब बिहार और दक्षिण भारत के हैं। फ्रांस के शासक 80 हजार भारतीयों को यहॉ गन्ने की खेती करने के लिए लाए थे। लेकिन आज तीसरी पीढ़ी चल रही है और उनकी आबादी 13 लाख के करीब है। यहॉ के प्रधानमन्त्री, मंत्री और विधायक सभी हिन्दू हैं।

सिंगापुर ने बहुत कम समय में विकास की बेमिसाल गाथा लिखी है। इसके विकास में प्रथम प्रधानमन्त्री ली–हुआन–यू का महत्वपूर्ण योगदान है। जब यह देश आजाद हुआ था, तब इस के पास शायद ही ऐसी कोई चीज थी जिससे यह अपनी गरीबी से छुटकारा पा सके। लेकिन आज इसके श्रेय की बात करें तो सिंगापुर के लोगों का औसत वेतन दुनिया में तीसरे नम्बर पर है। शानदार सड़कों और हाईवे निर्माण पर जोर देकर सिंगापुर ने आधारभूत ढांचे का विकास किया। डिजिटल देश होने के चलते आपको वहॉ सुरक्षा बल ही नहीं दिखेंगे।

यहां का कानून देश के आम नागरिक से लेकर देश के राष्ट्रपति तक के लिए समान है। हमने यहाँ राष्ट्रपति को फुटपाथ पर पैदल चलते जाते देखा। कोई ताम–झाम नहीं। कोई स्पेशल ट्रीटमेंट भी नहीं। देश में कोई धरने–प्रदर्शन भी नहीं सफाई और प्रकृति से प्रेम, समुद्र किनारे बसे द्वीप इस देश की खूबसूरती को चार चॉद लगाते हैं।

यहाँ के लोगों को 4 आर के बारे में सिखाया गया है। रिन्यु, रिड्यूस, रिसाइकल और री–यूज। समुद्र के बीच होने के कारण यहॉ जगह की कमी है। इसी कारण जितना सिंगापुर जमीन से ऊपर है उससे ज्यादा जमीन के नीचे । यह 50 साल आगे का प्लान लेकर चला हैं। यहॉ की सड़क और यातायात व्यवस्था कई देशों से बेहतर हैं।

ली–कुआन–यू की देन– सिंगापुर के प्रधानमंत्री ली–कुआन–यू ने जो अनुशान सिंगापुर

को दिया उसके बाद सिंगापुर ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। आजादी के बाद यहॉ का पानी गंदा था और पानी से लगातार बदबू आती रहती थी लेकिन ली ने लोगों को साथ लेकर पानी को साफ करवाया। आज यहॉ के हर नल का पानी पीने लायक है। सिंगापुर आज अपराध मुक्त देश है। यहॉ कानून तोड़ने वालों के लिए सख्त सजा का प्रावधान है।

एक समय था जब सिंगापुर की सरकार ने आबादी को नियंत्रण में लाने के लिए दो से ज्यादा बच्चे पैदा करने वाले लोगों पर कर लगाना शुरू कर दिया और एक आज का समय है जब यहॉ बच्चा पैदा होने पर सरकार पैसा देती है। जितना पैसा बच्चे के नाम माता–पिता जमा करवाते हैं उतना ही पैसा सरकार जमा करवाती है। यही नहीं बच्चों को रूचि के अनुसार सरकार ही अभिभावकों को बताती है कि आपका बच्चा फलाँ क्षेत्र में ठीक है और फिर उस बच्चे की आगे की पढ़ाई का खर्च भी सरकार ही करती है। किगंजोनियां एक ऐसीजगहहैजहॉभविश्य का सिंगापुर तैयार किया जा रहा है। यहॉ बच्चों को किताबों से हटकर शिक्षा दी जाती है जैसे फायर ब्रिगेड, खाना बनाना, दवाईयों के बारे में, एयरपोर्ट और जहाज के बारे में भी बताया जाता है, ऐसी शिक्षा से उन्हें आत्मनिर्भर बनाया जाता है।

दुनिया का 40 प्रतिशत समुद्री व्यापार यहां से होकर गुजरता है। यहॉ दूसरा सबसे बड़ा कमाई का साधन पर्यटन है। देश की जी0 डी0 पी0 का 7 प्रतिशत पर्यटन से आता है। पर्यटन स्थलों को 10 या 15 वर्षो में बदल दिया जाता है ताकि नयापन बना रहे। अकेले भारत से ही यहॉ 12 लाख से अधिक पर्यटक आते हैं। सिंगापुर सरकार के मुताबिक वर्ष 2017 में 1.25 करोड़ अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों ने सिंगापुर का भ्रमण किया है। यहॉ हर पार्क, हर होटल और पर्यटनस्थल का प्रस्थान दुकान या शापिंग माल से होकर गुजरता है। यहॉ के गार्डन समुद्र को भरकर बनाये गए है। सिंगापुर में शादी में बुलाने का एक अलग रिवाज है। जिसकी शादी होती है वह या उसका परिवार आपको मेल करेगा फिर आपकी तरफ से स्वीकृति मेल आने पर ही आपके नाम का टेबल शादी वाले होटल में बुक होगा। यही नहीं आपको शगुन भी होटल में हुए शादी के खर्च के अनुसार ही देना होता है। यहॉ प्रकृति के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ की इजाजत नहीं है। यही कारण है कि शहर और प्रकृति का तालमेल करके और सुन्दर बनाया गया है।

यहॉ आपकी सेहत पर ध्यान देने के लिए सरकार आपकी मदद करती हैं। यहॉ पर आप अगर रोज 15 किलोमीटर पैदल चलते हैं तो सरकार आपको 10 डालर का इनाम देती है जो आपके खाते में अपने आप आ जाता है।

यहाँ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से जुड़ी कई यादें हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यहॉ लगभग 60,000 भारतीय फौजी मारे गए थे जिनकी याद में यहाँ एक मेमोरियल है। इसी आर्ट गैलरी की सीढ़ियों पर खड़े हो कर नेताजी ने नारा दिया था कि तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

आखिर में मै कहूंगा कि सिंगापूर जरूर जाएं। वहॉ के लोग हिन्दी भाषा भी समझते हैं और बहुत से लोग हिन्दी बोलते भी हैं।



बलराम
व.ले.प. (हिंदी कक्ष)

पैसे की औक़ात

मिले सफलता किस तरह, उस जन को श्रीमान
जिसने मुश्किल काम को, लिया असंभव मान

दूषित जब से जल हुआ, हुई प्रदूषित वात
होनहार बिरवान के, तब से पीले पात

देख आइना हाथ में, बढ़ा भूप का कोप
राजद्रोह के जड़ दिए. हम पर ही आरोप

कठपुतली हैं हम सभी, रंगमंच संसार
लौटें सब लेपथ्य में, कर पूरा किरदार

एक कमी है आप में, मत होना नाराज
कह कर अपनी बात की, रखते नहीं लाज

मिलते हैं अब जेल में, सुख-सुविधा के ढेर
भोग रहे आराम से, कातिल धनी दिलेर

कर देते हो फैसला, बिन ही तहक़ीक़ात
जान गए अब आप भी, पैसे की औक़ात



पूजा
एम.टी.एस.

कुछ बूँद आचमन

चिन्त है अशाँत, शाँति चाहता है मन।

शीतल सलिल सा, कुछ बूँद आचमन।।

आज शरद चाँदनी भी, उष्ण कर रही।

ज्वाल ग्रीष्म काल सी, दिल में जल रही।।

निष्ठुरता प्रवास का, असहनीय रूदन।

चिन्त है अशाँत, शांति चाहता है मन।।

घर से दूर रहते हैं, लौटने की आस नहीं।

निकटतम आज हमसे, यों जुदा हुए।।

स्थिरदृष्टि नेत्र लिए, अश्रुमय ज्वलन।

चित्त है अशाँत, शांति चाहता है मन।।

यों ये विरह वेदना के, तीव्रतम प्रहार।

कर रहे हैं आज हदय, मन तार-तार।।

चिरंतन पीर हुई है, अजस्त्र क्रदंन।

चित्त है अशांत, शांति चाहता है मन।।

परीक्षा की तैयारी कैसे करें

शशी जुल्का
पत्नी श्री एन0के0जुल्का
सेवा निवृत व0 लेखा अधिकार

मेरे पड़ोसी राम बाबू अपने किशोर वय पुत्र को समझा रहे थे तुम्हें यही खेलकूद और मटरगश्ती ही सूझेगी या पढ़ाई भी करोगे। हाईस्कूल की परीक्षा सिर पर है। यह अच्छे–अच्छे पढ़ाकुओं के होश ठिकायने लगा देती है। यहीं से बेस बनता है। तुम्हारे पिछले रिकार्ड एकदम रद्दी हैं। अब भी जमकर मेहनत न की, तो गए काम से।

मीनाक्षी अध्यापिका है। कम प्राप्तांक को लेकर वह भी अपने बेटे पर खीझती रहती है–तुम्हारा वही टी0वी0, मोबाइल, सोना और धमा–चौकड़ी, होश में आओ, परीक्षा करीब आ रही है। आज करियर की दौड़ में वही टिक सकता है जिसकी अच्छी मेरिट हो। मोहल्ले के और बच्चों के मुकाबले में तुम्हारे नंबर कितने कम हैं, सोचो तो सही।

हर साल अक्तूबर के पहले हफ्ते से आम परिवारों में इस तरह की चिकचिक शुरू हो जाती है। वैसे पहली नजर में इन कथनों में कोई बुराई नहीं है। कौन मां–बाप नहीं चाहेंगे कि उनका लाड़ला जीवन में अच्छी सफलताए अर्जित करें ? बच्चे को दिशा–निर्देश देते रहना माता–पिता का दायित्व है। किन्तु गहराई से देखने पर यह सिर्फ फटकार और नसीहत है और न प्रोत्साहन। बच्चे के क्रियाकलापों पर नकारात्मक टिप्पणी जरूर है। अन्य बच्चों की तुलना में अपने बच्चे को कमतर बताना तो बहुत ही खतरनाक है। यह बच्चे के अंदर हीनता–बोध और तनाव पैदा करता है। परीक्षा मूलतः शिक्षा–काल का स्वाभाविक पड़ाव है, पहाड़ ढ़केलने जैसा दुष्कर कार्य नहीं। किन्तु उपर्युक्त टिप्पणियों में परीक्षा की एक भयावनी शक्ल मौजूद हैं, जो बच्चे के आत्मविश्वास के लिए घातक है।

मध्य और निम्न–मध्य वर्ग के अभिभावक अपने बच्चों की अच्छी मेरिट को लेकर ऊंचे सपने तो देखते हैं, लेकिन इसे साकार करने का उनका प्रयास अधिकतर रामबाबू और मीनाक्षी जैसा बेढंगा होता हैं। बार–बार यह अहसास कराना कि परीक्षा के प्राप्तांक ही भविष्य के सपनों की आधारशिला हैं, परीक्षा को लेकर एक दबाव बनाता है। इसके फलस्वरूप बच्चे तनावग्रस्त होजाते हैं और परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन नहीं करपाते हैं। सोचने की बात है, कुछ बच्चे क्यों अपेक्षाकृत अधिक सफलता प्राप्त कर ले जाते हैं, वहीं उनके समान या अधिक योग्यता वाले बच्चे अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाते। अधिकांश मां–बाप समझते हैं कि यह बच्चे की बौद्धिक योग्यता के श्रेष्ठ प्रदर्शन का प्रतिफल है। इसमें कुछ गलत भी नहीं हैं मगर यह जानना आवश्यक है कि बुद्धि के कई रूप होते हैं। एक बच्चा पढ़ाई के मामले में तेज हो सकता है, तो दूसरा खेलकूद में। किसी के अन्दर पेन्टिंग या गाने बजाने की क्षमता होती हैं। कुछ बच्चों में अच्छी तर्कशक्ति और विश्लेषण की योग्यता देखने को मिलती है। नये एवं सृजनात्मक ढंग से सोचने और समस्याओं का समाधान करने की अदभुत क्षमता वाले बच्चे भी होते हैं। ये अलग–अलग तरह के बुद्धिमान होने का मतलब यह नहीं है कि बच्चे को उसकी मनोदशा, अभिरूचि और जन्म जात संस्कार से परे किसी भी क्षेत्र में ढकेल कर आप चमकीले परिणाम की आशा कर सकें। माता पिता को यह भी सोचना चाहिये कि हर बच्चा यूनीक होता है। मनोवैज्ञानिक रार्बट

स्टनवर्ग का यह दृष्टिकोण याद रखना चाहिये कि परीक्षा में जितना अच्छा प्रदर्शन विश्लेषात्मक बुद्धि के बच्चे कर सकते हैं, वैसा सृजनात्मक और व्यवहारिक बुद्धि के बच्चों के लिए संभव नहीं है। किन्तु इसके बावजूद भी इन्हें कमतर नहीं आंका जाना चाहिए। ये बच्चे भी अपनी बुद्धि–सापेक्ष क्षेत्र में क्षमता के अनुकूल सफलता के उच्च शिखर छूने में सफल हो सकते हैं।

रहा परीक्षा में परिणाम, तो वह सिर्फ संयोग या एकांग्री प्रयास का फल नहीं होता। वह मूलतः योजनाबद्ध ढंग से धैर्यपूर्वक किये गये सतत प्रयास की परिणति होती है। आप अपने बच्चे को लेकर योजना बना सकते हैं। सबसे पहले उसे परखें, उसकी अभिरूचि को पहचानें। वास्तव में बच्चे के क्रियाकलाप उसकी आन्तरिक शक्तियों के संकेत हैं। उसकी किसी ऐसी शक्ति यानी गुण की खोजकरें, जिसकी प्रशंसा की जा सके। इस गुण के आधार पर उसे शाबाशी दें। इससे उसे प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलेगी। उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। यह स्थिति निश्चय ही प्रयत्न करने की क्षमता का विकास करेगी। तनाव रहित स्थिति में बच्चे का मस्तिष्क अधिक क्रियाशील होता है। भय, हीनताबोध, तनाव, आत्मसम्मान पर चोट और आत्मविश्वास की कमी ऐसे कारक हैं, जो बच्चे की एकाग्रता पर बहुत खराब असर डालते हैं। इसलिए बच्चे के क्रियाकलापों के विषय में नाकारात्मक टिप्पणियों और हतोत्साह करने वाले शब्दों से बचें। क्योंकि यह उसकी कल्पना, जिज्ञासा और संप्रेषण निर्माण की क्षमता का ह्रास करता है।

बच्चे को भय दिखाकर आप बेहतर परिणाम की आशा नहीं कर सकते। भय और तनाव से घिरे बच्चे में बड़े लक्ष्य का पीछा नहीं कर पाते हैं। यह बच्चे अधिकतर पाठ्यक्रत के सरल हिस्सों में ही अपना ध्यान लगाते हैं; श्रमसाध्य और कठिन पाठ उससे अछूते रह जाते है, क्योंकि इनसे जूझने का साहस उनमें नहीं होता हैं, जबकि परीक्षा में चालीस प्रतिशत सवाल पाठ्यक्रम के कठिन स्थलों से लिये जाते हैं।

अच्छी मैरिट के लिए आप बच्चे को आत्मविश्वास से लैस करें, फिर प्रेरित करें। याद रखें, शुष्क उपदेश प्रेरणा नहीं देते। यह सुनिश्चित करें कि परीक्षा के दिनों में बच्चे का स्वाभाविक दैनिक चक्र बिगड़ने न पाये। सुबह का नाश्ता, दोपहर और रात का भोजन वह समय से करें। खाने में सब्जी, रोटी, दाल, चावल और सुविधानुसार फल या दूध दे सकते हैं। यह सुपाच्य खाद्य हैं। चिकनाईयुक्त तली–भूनी सामग्री शरीर में सुस्ती लाती है, इससे बचा जाना चाहिये। बच्चे को खेलकूद की गतिविधि से एकदम अलग न होने दें। बल्कि थोड़ी देर खेलने–कूदने के लिए प्रेरित करें। सात घंटे की नींद बच्चों व किशोरों के लिए आवश्यक होती हैं। इसके अभाव में शारीरिक और मानसिक क्रियाशीलता में बाधा पहुंचती है।

बच्चा एक घंटा पढ़ाई करले तो उसे दस–पन्द्रह मिनट का ब्रेक लेने को कहें। इससे मस्तिष्क की एकाग्रता बढ़ती है। रात में बिस्तर पर जाने के बीस–पच्चीस मिनट पहले बच्चे की पढ़ाई बंद करा दें। इससे वह सुबह जागने पर अधिक तरो–ताजा महसूस करेगा। अगर आप घर में बच्चे के अध्ययन का माहौल सहज रखते हैं तो परीक्षा एक पर्व जैसी रोचक बन जायेगी। समय–सारिणी के अनुसार पढ़ाई करने से अच्छी तैयारी होती है।

अन्तिम समय में हड़बड़ी के बीच पढ़ने से बच्चे को रोकें। यह इतनी रद्दी पढ़ाई होती है कि पहले का याद पाठ भी विस्मृत करा सकती है। अगर परीक्षा के दिनों में बच्चा हमेशा पढ़ता है, बेवक्त खाता–पीता और सोता जागता है तो वह बिगड़ा हुआ दैनिक चक्र हैं जो परीक्षा में उसकी एकाग्रता व

प्रदर्शन को कमजोर कर सकता है।

रही प्रेरणा की बात तो इस संबंध में अपनी पढ़ाई के दिनों का एक अनुभव साझा करना चाहूंगीहमारे एक मास्टर साहब थे। वे हमसे जो कराना चाहते थे, उसे कभी आदेशात्मक ढंग से नहीं कराते थे। परीक्षा की तैयारी, होमवर्क अथवा खेलकूद के समय के निर्धारण का मामला हो या परीक्षा में कैसे अधिक अंक निकाले जायें, ये सारी बातें मास्टर साहब अपने बचपन के संस्मरणों के माध्यम से कक्षा के सामने रखते थे। परीक्षा करीब आने पर मास्टर साहब बताते थे कि परीक्षाकक्ष में जाने की घंटी लगते ही उनको घबराहट होने लगती थी। इसका समाधान उनके दादाजी ने कराया था, आसान सी युक्ति थी कि परीक्षा शुरू होने के करीब पन्द्रह मिनट पहले गेट के आस–पास टहलते हुए अपने किसी अभिन्न मित्र से गपशप की जाये और घंटी लगने पर एक गिलास पानी पीकर परीक्षा हाल में प्रवेश किया जाये।

हमारे इन मास्टर साहब के गुरू जी का कथन था–प्रश्नपत्र मिलने पर एक बार सरसरी तौर पर और पुनः गंभीरता पूर्वक पढ़ना चाहिये। इससे तनाव नहीं बनता। पहले प्रत्येक खण्ड के सरल प्रश्नों को हल करने से आत्मविश्वास बढ़ जाता है, जो अपेक्षाकृत कठिन प्रश्नों को चिन्तन द्वारा हल करने की शक्ति प्रदान करता है। उनके एक अन्य अध्यापक की यह बात तो बहुत महत्वपूर्ण थी कि कोई कठिन प्रश्न पहली बार पढ़ने पर जितना मुश्किल प्रतीत होता है, वही दो तीन बार पढ़ने पर अपेक्षाकृत कम मुश्किल लगने लगेगा। इसके साथ मास्टर साहब अपना अनुभव जोड़ते हुए कहते थे–मैं ऐसे प्रश्नों को परीक्षा में सबसे अन्त में बेझिझक लिखता था, क्योंकि इसमें हमारे पास खोने को कुछ नहीं, मगर पाने को बहुत कुछ होता था।

विद्यालय के अन्य अध्यापकों के मुकाबले इन मास्टर साहब की बातें हमें अधिक ग्राह्य लगती थीं। यह मास्टर साहब बताते थे–परीक्षा में ढेरों अंक लेकर कोई बड़े तीर मार ले, यह जरूरी नहीं हैं, संसार में ज्यादातर बड़े काम पढ़ाई में सामान्य यहां तक कि फिसड्डी रहें लोगों ने किए हैं। उनकी इस बात से यह भय तो कम हो ही जाता था कि परीक्षा ही दुनिया की सबसे बड़ी चीज़ हैं। बच्चे की पढ़ाई और परीक्षा में अच्छी सम्प्राप्ति के लिए आप भी ऐसी ही प्रेरक युक्तियों का सहारा लें। आरम्भ में बच्चे से उसकी रूचि के कार्य करायें। बाद में धीरे–धीरे लक्ष्य की तरफ मोड़ें और परीक्षा घड़ी को उत्सव/धर्मिता की दिशा में ले जायें।



कीर्ति चतुर्वेदी
वरिष्ठ लेखाकार

कोयल



देखो कोयल काली है पर
मीठी है इसकी बोली
इसने ही तो कूक कूक कर
आमों में मिश्री घोली
कोयल–कोयल सच बतलाना
क्या संदेशा लाई हो
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आई हो।
क्या गाती हो किसे बुलाती
बतला दो कोयल रानी
प्यासी धरती देख मांगती
हो क्या मेघों से पानी?
कोयल यह मिठास क्या तुमने
अपनी माँ से पाई है?
माँ ने ही क्या तुम को मीठी
बोली यह सिखलाई है?
डाल–डाल पर उड़ना गाना
जिसने तुम्हें सिखाया है
सबसे मीठे मीठे बोलो
यह भी तुम्हें बताया है।
बहुत भली हो तुमने माँ की
बात सदा ही है मानी
इसलिए तो तुम कहलाती
हो सब चिड़ियों की रानी।



चिड़िया रानी

तिनके लाकर महल बनाती
ऊंची डाली पर लटकाती,
खेतों से फिर दाना लाती,
नदियों से भर लाती पानी।
तुझको दूर न जाने देंगे,
दानों से आंगन भर देंगे
और हौज में भर देंगे हम
मीठा मीठा ठंडा पानी।



फिर अण्डे सेकेंगी तू जब
निकलेंगे नन्हें बच्चे तब
हम आकर बारी–बारी से
कर लेंगे उनकी निगरानी।
फिर जब उनके पर निकलेंगें
उड़ जाएंगे बया बनेंगे
हम तब तेरे पास रहेंगे
तू मत रोना चिड़िया रानी।







हिन्दी पखवाड़ा–2022

मैं भारत हूँ, झुकता नहीं हूँ



दया सागर
स०ले०प० अधिकारी

मजबूत हूँ, खुद्दार हूँ
हरा भरा संसार हूँ
विश्व में सम्मान है मेरा
आगे बढ़ना काम है मेरा
मैं रुकता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

मंगोल, मुग़ल, मुगलों ने लूटा
फिर भी मेरा सब्र न टूटा
थी बाधाएँ हजार
दुश्मन थे अन्दर बाहर
मजबूती से खड़ा रहा
मैं टूटता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

लूटा गया दबाया गया
कई बार मुझे हराया गया
संघर्ष करता रहता हूँ
आगे बढ़ता रहता हूँ
मैं थकता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

मोहम्मद गौरी ने वार किए
जयचन्द जैसे गद्दार हुए
सिकन्दर खाली गया
पर अंग्रेजों ने बाँट दिया
मैं बँटता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

सोने के भण्डार थे
धनधान्य के अम्बार थे
दूध की नदियाँ बहती थी
विश्वगुरु कहलाता था
मेरी पहचान को मिटाया गया
मैं मिटता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

अंग्रेजों ने हर पैतरा आजमाया
भारतीयों को आपस में लडवाया
व्यापार के नाम पर धोखादेकर
200 साल तक गुलाम बनाया
कुर्बानी देकर शहीद हो गये
रणबांकुरों ने आजाद करवाया
अत्याचार मैं सहता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

सर्दी गर्मी बसंत बरसात
सारे संसाधन मेरे पास
ज्ञान विज्ञान और भगवान
खेत खलिहान पहाड़ और नदियाँ
वैसाही हूँ बीत गई सदियाँ
मैं बदलता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

सबका साथ सबका विकास
यहीं सोच अपना रहा हूँ
हिन्दू मुस्लिम सिख इसाई
सबकी उन्नति मैं चाह रहा हूँ
देश भक्तों में भेद
मैं करता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

शक्ति अहिंसा और विकास
यहीं मेरा नारा है
ईट का जवाब पत्थर से दिया
जब भी दुश्मन ने ललकारा
रण में पीछे
मैं हटता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ

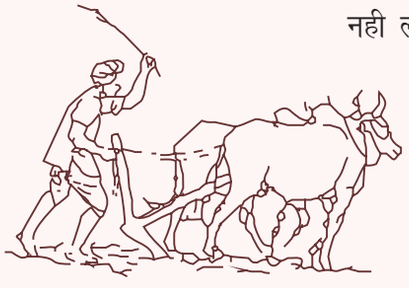
विश्व में मेरा नाम हुआ
हर मंच पर मेरा सम्मान हुआ
दुश्मन ने अपनी दुम दबा ली
अर्थ व्यवस्था में पांचवा स्थान मिला
निरंतर मैं बढ़ता जा रहा हूँ
आजादी का अमृत उत्सव मना रहा हूँ
मैं लक्ष्य से भटकता नहीं हूँ
मैं भारत हूँ
झुकता नहीं हूँ



मन्निका कश्यप
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
(प्रतिनियुक्ति रा.तक.संस)

मेरे देश के किसान

मेरे देश के किसान तू है कितना महान
शास्त्री जी ने भी कहा था जय जवान जय किसान
उठ जाग अपनी इस शक्ति को अब पहचान
देगी सरकार तुझे यह अनोखा स्वाभिमान
नयी प्रोद्योगिकी से तेरी फसले बढ़ेगी
खेतों में अब तेरे हरियाली रहेगी
कृषि सिंचाई योजना का यही है प्रावधान
उठ जाग अपनी इस शक्ति को पहचान
बाढ़ सूखे से न हो परेशान थमेंगे नहीं अब तेरे काम
मंडी में बिकेगा अनाज मिलेंगे अब सही दाम
कंप्यूटर व मोबाईल देंगे फसल की हर जानकारी
नही लगेगी अब कोई समस्या भारी



सरकारी बैंको में खुलेगा अब तेरा खाता
जन-धन योजना से जुड़ेगा अब तेरा नाता
ग्राम ज्योति योजना करेगी इस समस्या का समाधान
बिजली पानी मिलने से होगा अब खेतों का कल्याण
उठ जाग अपनी इस नयी शक्ति को पहचान
सरकारी प्रावधानों से बनेगा अब हर किसान बलवान
शास्त्री जी ने भी कहा था जय जवान जय किसान
अब हम सब मिलकर बनायेंगे इस देश को महान

शासकीय सेवा में मेरी ज्वाइनिंग



श्रीमती अनुराधा सूद
व.ले.प.अ.

कई स्मृतियाँ आप के जेहन में इतनी गहरी होती है, जिन्हें आप भुला नहीं पाते। कुछ ऐसी ही स्मृति मेरी शासकीय सेवा में ज्वाइनिंग से सम्बन्धित है, जिसे मैं कभी भूल नहीं सकती।उन्हीं कुछ अविस्मृत यादों को आज आप के साथ सांझा कर रही हूँ।

मैं एक मध्यम वर्गीय परिवार से हूँ।बचपन में जब कोई पूछता था कि बड़े हो कर क्या बनोगे तो एक ही जबाब होता था डॉक्टर। दसवीं की पढ़ाई के बाद आगे के पाठ्यक्रम के केवल तीन विशिष्ट स्ट्रीम का ही ज्ञान था वह थे विज्ञान, वाणिज्य और कला संकाय। चौथे विकल्प का कोई ज्ञान न था और न ही परिवार में कोई मार्गदर्शन करने वाला था। स्कूल की कुछ पसंदीदा सहेलियों ने वाणिज्य संकाय में दाखिला लिया तो उनकी देखा-देखी उसी विषय में स्नातक करने का निश्चय किया। उस समय वाणिज्य संकाय में स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन की व्यवस्था हमारे शहर में नहीं थी तो कला संकाय में प्रवेश ले लिया। स्नातकोत्तर उपरांत, एक निजी स्कूल में शिक्षिका की नौकरी ज्वाइन कर ली।अभी कुछ समय ही बीता था कि इस सब के दौरान मेरी कालेज की एक सहपाठिन सहेली की महालेखाकार कार्यालय (लेखा एवं हकदारी) शिमला में नौकरी लग गई। कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा के लिए जिस क्षेत्र का चयन फार्म भरते समय करते थे सामान्यतः पोस्टिग भी उसी क्षेत्र में हो जाया करती थी। अब मेरी एक अन्य सहपाठिन सहेली द्वारा खोजबीन की गई कि उसने (पहली वाली) कौन-सा पेपर दिया था हम दोनो भी वहीं पेपर देंगे। लेकिन शिमला जाकर पेपर देने के मामले पर मैं मुकर गई। उसके मनाने पर हम दोनो ने भी उसी परीक्षा का फार्म भरा तथा बाजार से इस पेपर से सम्बन्धित जो भी अध्ययन सामग्री मिली उसे ले कर पूरे मन से परीक्षा की तैयारी भी की। वर्ष 1989 में शिमला आकर कर्मचारी चयन आयोग का लिपिक संवर्ग का पेपर दिया।

परीक्षा उपरान्त मैं भी अपने स्कूल में व्यस्त हो गई तथा साथ ही पत्राचार माध्यम से बी० एड० में प्रवेश ले लिया।जून 1991 के मध्य माह में एक दिन शाम के समय मैं अपने घर पर टी.वी. देख रही थी तो मेरा छोटा भाई दो अपरिचितों को साथ ले कर आया और कहने लगा कि ये लोग किसी पेपर (प्रतियोगी परीक्षा) में तुम्हारे टॉप करने की बात कर रहे है तथा अपनी मैगजीन के लिए तुम्हारा साक्षात्कार लेना चाहते हैं। इस प्रकार मुझे परीक्षा में अपने पास होने का पता चला, मैं उस परीक्षा को दे कर भूल भी चुकी थी तथा यह जान कर बड़ी हैरानी और खुशी हुई कि मैंने न केवल वह प्रतियोगी परीक्षा पास की थी परन्तु अपने क्षेत्र में रैंक वन भी पाया था।वे दोनो अपरिचित कम्पीटीशन रैफ्रशर पत्रिका के लिए मेरा इन्टरव्यू लेने शिमला स्थित महालेखाकार कार्यालय गए थे लेकिन तब तक मुझे अपने चयन की कोई जानकारी न होने के कारण मैंनें ज्वाइन नहीं किया था वहाँ से वे मेरे घर का पता ले कर मेरे तक पहुँचे

थे। इस साक्षात्कार के दो दिन पश्चात् ही मुझे महालेखाकार कार्यालय शिमला से नियुक्ति-पत्र प्राप्त हुआ, जिस में साथ ही यह भी लिखा था कि यदि आप 1 जुलाई 1991 तक इस कार्यालय में ज्वाइन नहीं करते तो यह समझा जाएगा कि आप इस नियुक्ति के इच्छुक नहीं है। उन दिनों मेरी बी.एड. की परीक्षाएं चल रही थी अतः यह सोच कर कि अभी प्रथम जुलाई को काफी दिन है, बी.एड. की परीक्षा उपरांत ही अपने बड़े भाई के साथ शिमला गई। वहाँ जा कर यह जान कर बड़ी हैरानी हुई कि मेरे साथ के बैच के सभी पास प्रतियोगी दिसम्बर माह 1990 के प्रथम - सप्ताह में ही इस नौकरी को ज्वाइन कर चुके थे जबकि मैं उस क्षेत्र में टॉप करने के बावजूद भी जून 1991 तक इस सब से अनभिज्ञ थी। लेकिन अपनी नासमझी के कारण मैनें इस देरी का कारण जानना भी न चाहा। इन सब से भी बढ़ कर नादानी यह की कि मैं 26 जून 1991 को कार्यालय शिमला में पहुँची, यहाँ के प्रशासन अनुभाग ने मुझे स्थानीय अस्पताल जा कर चिकित्सा परीक्षण करवाने को कहा। मैं शिमला शहर की चढ़ाई - उतराइयों से इतना अधिक थक चुकी थी कि 27 जून 1991 को शिमला शहर के एक स्थानीय सरकारी अस्पताल में परीक्षण करवाने उपरांत संजौली में अपने एक रिश्तेदार के घर चली गई। मेरे या रिश्तेदार के घर से कोई भी सदस्य शासकीय सेवा में नहीं था जो मुझे समय पर ज्वाइन करने का महत्व समझाता और मैंने भी इत्मीनान से अपने नियुक्ति में दी गई अवधि के अन्तिम दिन महालेखाकार कार्यालय शिमला में शासकीय सेवा में अपनी ज्वाइनिंग दी।

आज भी मैं उस दूसरी सहेली जिस के मनाने पर मैं शासकीय सेवा में आई, बहुत याद करती हूँ। वर्तमान में वह विदेश में एक बड़ा अच्छा बिज़नेस चला रही है।अपने माता- पिता के गर्वित चेहरों की उस खुशी को याद करती हूँ तो एक सुखद अनुभूति का एहसास आज भी महसूस करती हूँ। मेरे पिता जी ने मेरे साक्षात्कार छपे पत्रिका की हिन्दी और अंग्रेजी दोनों प्रतियां बड़ी सहेज कर रखी थी। मैं नौकरी ज्वाइन करने के छः - सात माह तक भी जब भी अपने शहर जाना होता था तो चण्डीगढ़ के मुख्य बस- स्टैण्ड के बुक स्टालस में लगी पत्रिकाओं में अपने साक्षात्कार वाली पत्रिका के मुख पृष्ठ पर लगी अपनी तस्वीर देखना कभी नहीं भूली।

अपनी नासमझी पर आज भी हंसी आती है और रोमांच से भी भर जाती हूँ। ये बीती हुई जिंदगी की यादें, खूबसूरत एहसास तथा अनुभव मन को फिर से तरो-ताजा कर जाते है।



विजय लक्ष्मी
सहायक लेखा अधिकारी

यात्रा

यह जिन्दगी
यात्रा ही तो है
अनवरत चलती है
वक्त की तरह
अपनों का साथ
कभी अजनबी भी
चलते हैं साथ
चलते चलते
छूटते जाते हैं
कितने ही हाथ
पूर्ण होती जाती है
उन की यात्रा
पथिक हैं हम
यह धरा है
एक अस्थायी पड़ाव
भूल जाते हैं हम
इस पड़ाव को
मान लेते हैं स्थायी
खो जाते हैं
जीवन की उलझनों को
सुलझाते हुए
आडम्बरों से भरपूर
चकाचौंध में
याद ही नहीं रहता
जाना है छोड़कर
सब रिश्तों को, अपनो को
हमसे पहले भी
बहुत अपने जा चुके हैं
उस यात्रा पर
निभा कर निश्चित समय
पल पल फिसल
रही है जिन्दगी
संभल, ऐ मन
अब तो रूख़ मोड़ अपना
भीतर की ओर
जो खोज रहा तू बाहर
सब है तेरे भीतर
यात्रा तो पूर्ण होगी ही
स्वयं को जान लेगा
तो अन्त सुखद होगा
यात्रा तो अनन्त है
चलती रहेगी
अगले पड़ाव की ओर

मरियम अकरम
कक्षा-5
पुत्री-मोहम्मद अकरम
व. लेखापरीक्षक

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस हमारे भारत देश में हर वर्ष 05 सितम्बर को मनाया जाता है। इस दिन हमारे दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्मदिवस होता है, जो एक महान आदर्श शिक्षक थे।

एक शिक्षक ही है जो मनुष्य को सफलता की बुलन्दियों तक पहुंचाता है और जीवन में सही और गलत को परखने का तरीका बताता है। कहा जाता है कि एक बच्चे के जीवन में उसकी माँ पहली गुरू होती है जो उसे सांसारिक बोध कराती है जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को बरतन का आकार देकर उसका मुल्य बढ़ा देता है उसी प्रकार शिक्षक शिष्य के जीवन को मूल्यवान बना देता है।

डॉ. राधाकृष्णन जी चाहते थे कि उनका जन्म दिन देशभर के शिक्षकों के योगदान को याद करने के लिये मनाया जाए, ताकि शिक्षको को सम्मान मिल सके। यही कारण है कि वर्ष 1962 से प्रत्येक वर्ष हम डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्म दिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हैं।

गुरूगोविन्द दोउ खड़े काके लागू पाय।
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।

इस दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि जब आपके सामने गुरू और भगवान दोनो खड़े हों तो आप सर्वप्रथम किसे प्रणाम करें। गुरू हमें भगवान तक पहुंचाने का मार्ग दिखाता है अर्थात गुरू सबसे महान होता है। ऐसे में आपको सर्वप्रथम गुरू का वंदन करना चाहिये। गुरू का दर्जा सबसे उपर होता है।

गुरू हमें केवल किताबी ज्ञान ही नही देते बल्कि जीवन जीने का तरीका सिखाते हैं। गुरू हमें जीवन की हर परेशानी से निकलने का मार्ग दिखाते है।



जीवन के हर अंधेरे में रोशनी दिखाते हैं गुरू।
जब रास्ते बन्द हो तो नया रास्ता दिखाते हैं गुरू।।



कामयाबी को अहंकार से बचाएं

कीर्ति चतुर्वेदी
वरिष्ठ लेखाकार

अहंकार से सदैव सावधान रहिए। वह जितना देता है उससे ज्यादा ले लेता है। इसी क्रम में एक चीज ऐसी छीन लेता है जिसके परिणाम बहुत बुरे आते हैं, वह है सोचने की शक्ति। भीतर की ऊर्जा, आत्मविश्वास और सोचने की ताकत ही किसी को सफलता के साथ शीर्ष तक पहुंचाती है। वहां सावधान न रहे तो अहंकार घेर कर हमारी सोचको परिवर्तित कर देता है।

रावण के साथ ऐसा ही हो रहा था सारी दुनिया को जीत लेना आसान नहीं था। अपनी पूरी क्षमता झोंककर वह विश्वविजेता बना था लेकिन शिखर पर पंहुचते ही अहंकार में डूब गया। जैसे ही सूचना मिली कि राम सेतु बांध कर लंका में पहुंच चुके हैं उसने जिस तरह से प्रतिक्रिया दी वह हमारे लिए सबक है। पहला ही प्रश्न किया क्या सचमुच उस समुद्र को बांध लिया? तुलसीदास जी ने लिखा –निज बिकलता बिचारी बहोरी। बिहंसि गयऊ गृह करि भय मोरीं समुद्र बंधन की बात सुनते ही अपनी व्याकुलता छुपा कर हसंता हुआ महल में चला गया । व्याकुलता दो तरह की होती है– एक बाहर गलत काम करें और भीतर व्याकुल हो जाए, दूसरी बाहर सही करते हुए भी भीतर परेशान हो जाए। बड़े–बड़े कामयाब लोग क्यों डिप्रेशन में चले जाते हैं यह रावण बता रहा है। उसकी व्याकुलता का कारण अहंकार था, जिसे हंसी से दबाया।

हंसी और मुस्कान मनुष्य को खोलती है परन्तु लोग उदासी और निराशा को छिपाने के लिये इसे हथियार बना लेते है।

रावण यदि व्याकुल और चितिंत था तो अपने ही कारणों से। हम सब सफलता की यात्रा पर निकले है पर इस यात्रा में रावण जैसी गलती कभी न करें।

अपने परिश्रम, अपनी कामयाबी को अंहकार से बचांए।



सुनीता देवी
व.लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

ये है कार्यालय महालेखाकार, इसमें लगने पर
नौकरी अपनी तो हो गई जय जयकार
और साथ में तनख्वाह ले कर हम
हो गए माला-माल,
ये है कार्यालय प्रधान महालेखाकार

ये सिर्फ कार्यालय ही, नहीं, ये हमारा कार्य मंदिर है
इसकी हर चीज़ अति सुन्दर है
ये कार्यालय प्यार भरा समंदर है
हर भाषा हर राज्यों के लोग कार्य करते इसके अन्दर है,
जनाब, ये है कार्यालय प्रधान महालेखाकार

एक दिन ऐसा भी आया था
आग-धुआँ भी इस कार्यालय में समाया था
जिस आग ने हमारे अरमानों को जलाया था
बड़ी मुश्किल से वो वक्त हमने भुलाया था
सब अधिकारियों/कर्मचारियों ने इस परिस्थिति को मिल कर हराया था
इस ईमारत को देख कर सबका मन भर आया था
कोई नहीं था इस ईमारत को छोड़ने को तैयार
जनाब, ये है कार्यालय प्रधान महालेखाकार

ऑडिट और अकाउंट की अलग है बात
इसके सब कर्मचारी मिल कर रहते है साथ
फिर डराने की क्या है बात, जब है सब साथ
मेरा प्रणाम है इस कार्यालय को और इसमें कार्य करने वालों को
क्योंकि नर में ही नारायण बसते है श्रीमान
इस कार्यालय को मेरा शत-शत प्रणाम
हम कार्यालय और कार्यालय के कर्मचारियों व अधिकारियों का
दिल से करते है सत्कार
जनाब ये है कार्यालय प्रधान महालेखाकार



कुलदीप सिंह
स.ले.व.अ.

योग का हमारे जीवन में महत्व

योग का अर्थ : अपनी चेतना का बोध व अपने अन्दर निहित शक्तियों का विकसित करके आत्मा का साक्षात्कार एवं पूर्ण आंनद की प्राप्ति करना । योग एक ऐसी क्रिया है, जो न सिर्फ मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में मदद करती है बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने में भी सहायक है योग एक ऐसी विद्या है जिससे हमारे दुखों की निवृति होती है। व्यावहरिक स्तर पर योग शरीर, मन और भावनाओं में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का एक साधन है। योग की महत्वता को देखते हुए ही, हर साल 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

आज के आधुनिक जीवन में मनुष्य का मन और शरीर अत्यधिक तनाव, प्रदूषण और भागमभाग के कारण से रोगग्रस्त हो गया है। आज के युग में मनुष्य का मुख्य लक्ष्य धन और सभी प्रकार की सुख सुविधाओं को प्राप्त करने पर केन्द्रीत रहता है। जिससे मनुष्य अपने जीवन के पूर्ण विकास से दूर है। दौड़ भरी जिंदगी में मनुष्य अपने स्वास्थ्य पर ध्यान ही नहीं दे पा रहा है। ऐसे में योग की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। योग न केवल व्यस्कों के लिए, बल्कि बच्चों से लेकर बूढ़ों तक अत्याधिक उपयोगी है।

अगर हम ध्यान दें तो एक सरकारी कर्मचारी जो कि कार्यस्थल में पूरा दिन कार्य की व्यस्तता के कारण मानसिक व शारीरिक रूप से तनाव का अनुभव करते हैं का निदान केवल योग द्वारा ही किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार के योग आसनों को करने के उपरांत न केवल हमारे शरीर का फायदा होता है बल्कि हमारी मानसिक शक्ति में वृद्धि से हमारी कार्यकुशलता पर भी अच्छा प्रभाव पडता है। योग का उद्देश्य हमारे जीवन का समग्र विकास करना है। हम अपनी दिनचर्या की शुरूआत सूर्य नमस्कार, शारीरिक अभ्यास व विभिन्न प्रकार के आसनों से कर सकते हैं। योग में प्रणायाम का विशेष महत्व है। प्राण का अर्थ है: ''जीवन शक्ति'' एवं आयाम का अर्थ है ''उर्जा पर निंयत्रण होना है'' प्राणायाम के तीन मुख्य प्रकार होते हैं अनुलोम-विलोम, कपालभारती प्राणायाम और भ्रांमरी प्राणायाम । योग के द्वारा मानसिक क्षमता में वृद्धि होती है। रोग व्याधियों के अनुसार लाभ देने वाले योग आसन इस प्रकार है। सर्वागासन, पदमासन, चक्रासन, हलासन, धनुरासन, ताडासन व शीर्षसान आदि हैं। शीर्षासन को सब आसनों का राजा कहा जाता है। इससे हमारे मस्तिष्क को अत्यधिक बल मिलता है सभी प्रकार के आसनों का लाभ लम्बे समय के उपरांत ही मिलता है। योगाभ्यास से व्यक्ति की अनेक क्षमताओं का विकास होता है इसलिए हमारे जीवन में योग का अत्यधिक महत्व है। इन योग अभ्यास को नियमित रूप से अपनी दिनचर्या में शामिल करना होता है। अतः हमें नियमित रूप से योग का अभ्यास करना चाहिए।

अतः अंत में यह कहना उचित होगा कि योग एक जीवन जीने की कला है। लक्ष्य हमारे शरीर व मन को स्वस्थ बनाना है।



मेरा वजूद

सुनीता ग्रेवाल
पत्नी मनोहर ग्रेवाल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा वजूद मेरा मान मेरी पहचान है
मेरी ख्वाहिशों से बढ़कर
मेरे लिए मेरा आत्मसम्मान है

नहीं चाहिए खुद की नज़र में
गिरकर ऊंचाईयां मुझे
इज़्ज़त से धरती पर जियूं
वही मेरा आसमान है

मुझे मंजूर नहीं सिर झुका कर चलना
न मंजूर है नज़रे चुराकर बात करना
सिर उठा रहे यही मेरा अरमान है

क्यों लूँ मैं जमाने भर की तोहमतें
बदले में किसी भी चीज़ के
मेरा मान-सम्मान मेरी खुशी का सामान है

कोई मुझे बरगलाए न,मैं खुश हूं
मैं गरीब हूं, अनजान हूं
ये समझकर मुझे छल जाओगे
इस फ़िराक़ में रहने वाले नादान है

हल्के में लेकर यूँ बेकदरी न करना
मैं कमज़ोर नहीं लाचार नहीं न मैं बेचारी हूँ
सर उठा कर जी सके मैं वो सशक्त नारी हूं
अपने हौसलों पर गुमान है,
नादान है नासमझ है वो, जो मेरी शख्सियत से अनजान है

ग़र चाहूँ तो कुछ भी कर जाऊं
जो करता है पुरुष मैं भी कर जाऊं
भटक जाता है जैसे पुरुष
शराब कबाब और शबाब में
वो बात मेरे लिए भी आसान है

पर मर्यादा में ही रहना है मुझे ये भान है
क्योंकि मेरे लिए सबसे बढ़कर
मेरा मान,मेरा सम्मान है!!!



यात्रा के कुछ कटु- सुखद अनुभव

श्रीमती अनुराधा सूद
व.ले.प.अ.

1981 से 1991 के दौरान खालिस्तान आंदोलन अपने चरम पर था इस के निशाने पर हिन्दू और उदारवादी सिख थे। इस आंदोलन ने समाज को लगभग विभाजित कर दिया था। दशकों से चली आ रहे सिख-हिन्दुओं के रिश्तों में दरार आने लगी थी तथा वे आपस में बात करने से भी कतराने लगे थे। आए दिन के समाचार पत्र खालिस्तानी उग्रवादियों द्वारा निर्दोष लोगों की हत्याओं के समाचार से भरे रहते थे। इस अवधि के दौरान कई ट्रेनें और बसें लूटपाट का शिकार हुई तथा यात्रियों की हत्या भी की गई।

सन् 1984-87 के दौरान इन घटनाओं में काफी तेजी आ गई जिस कारण पंजाब में रात 8.30 बजे के बाद बसें नहीं चलती थी दिन के समय भी पुलिस वाले सभी बसों में चढ़ कर लोगों के सामान की तलाशी लेते थे। प्रत्येक सिख यात्री को शक की नज़र से देखा जाता था चरमपंथियों के कारण आम सिख भी पिस रहे थे।

यहाँ जिस यात्रा-वृतांत का वर्णन मैं करने वाली हूँ वह अगस्त की मेरी नौकरी ज्वाइन करने के बाद की पहली यात्रा का है। मेरी कुछ समय पूर्व ही शिमला में नई नौकरी लगी थी। मुझे शिमला से अपने घर जगाधरी (हरियाणा) जाना था।

मेरी नियुक्ति टाइपिंग अनुभाग में हुई थी उस अनुभाग में एक मैनेजर होता था तथा उस के मातहत हम तकरीबन 9–10 टाईपिस्ट कार्य करते थे। हमें हर दिन कार्यालय आते ही 86 नम्बर का कोटा मिल जाता था जिसे हमें उस दिन टाईप करना होता था। घर से आए लगभग डेढ़ महीने से ऊपर हो गया था। उन दिनों मोबाइल फोन का चलन नहीं था घर पर फोन द्वारा बात करने के लिए शिमला के माल रोड स्थित तारघर जाना पड़ता था। दूसरा संचार का माध्यम केवल पत्र हुआ करते थे। घर से पहली बार इतने समय के लिए बाहर निकली थी अतः घर- वालों की याद भी सता रही थी।

15 अगस्त दिन वीरवार का अवकाश था अतः एक दिन का अवकाश ले कर 4 छुट्टियों का अच्छा स्पैल बन रहा था। 14 अगस्त सुबह अपने मैनेजर से कहा,आज मुझे आगे का एक दिन का अवकाश लेकर घर जाना है। तुरन्त जबाव मिला, ठीक है अपना कोटा खत्म करो और चली जाओ। दुबारा पूछना ठीक नहीं लगा। बिना रुके अपना कोटा खत्म किया, उसे करते- करते दोपहर के डेढ़ बज गए।आनन-फानन में अनुमति लेकर स्थानीय बस- स्टैण्ड की तरफ भागी मुझे जल्द-से-जल्द चण्डीगढ़ जाने के लिए बस पकड़नी थी। वहाँ पंहुचते ही बस मिल गई, 10-15 मिनट बाद बस चल पड़ी और आधे घंटे बाद ही ड्राईवर ने शोघी में चाय पीने को बस रोक दी। मेरे को एक- एक मिनट बहुत भारी महसूस हो रहा था अंततोगत्वा आधे घंटे बाद बस चल पड़ी। मेरा ध्यान बार-बार कलाई घड़ी पर चला जाता था घरवालों से मिलने की बेचैनी थी। शाम छः बजे के करीब चण्डीगढ़ पहुँच गई। वहाँ उतरते ही अम्बाला कैंट जाने वाली बस में बैठ गई, घरवालों को सरप्राइज देने के लिए अपने आने की कोई पूर्व सूचना नहीं दी थी।

थोड़ी देर में बस अपने गंतव्य की ओर निकल पड़ी। थोड़े समय पूर्व जून 1991के दौरान पंजाब में दो ट्रेनों के करीबन 130 यात्री और कुछ बसें खालिस्तान उग्रवाद का शिकार हुए थे परिणामस्वरूप उन घटनाओं तथा स्वतंत्रता दिवस के पास होने के कारण सुरक्षा की दृष्टि से उन दिनों पंजाब क्षेत्र में शाम 6.30 के बाद बस- सेवाएँ निरस्त कर दी जाती थी। शाम साढ़े

जाती थी। शाम साढ़े छः बजे के करीब हमारी बस अभी अम्बाला से 20-22 किलोमीटर पीछे पंजाब क्षेत्र में ही थी अतः उसे बीच रास्ते ही रोक दिया गया। जहाँ बस रोकी गई उसी स्थान (लालडू) पर जुलाई 1987 में ऋषिकेश जा रही हरियाणा रोडवेज की बस के 38 हिन्दु तीर्थ यात्रियों को बस से उतार कर खालिस्तानी उग्रवादियों द्वारा गोलियों से छलनी कर दिया गया था तथा 33 के करीब यात्री उस में घायल हो गए थे। इस लिए यह स्थान बहुत ज्यादा संवेदनशील भी था। बस पूरी भरी हुई थी लेकिन उस बस में मेरे सिवा केवल एक महिला सवारी थी। बस की सवारियाँ धीरे- धीरे निजी वाहनों में लिफ्ट ले कर निकल रही थी। वो महिला जहाँ- जहाँ चलती मैं उस के साथ- साथ हो लेती। उस महिला ने भी दो-तीन वाहनों को रुकने के लिए हाथ दिया लेकिन बात नहीं बनी, अंततः एक ट्रक वाला इशारा देख कर रुका उस महिला ने अम्बाला सिटी में अपने किसी रिश्तेदार के घर जाना था उस ट्रक वाले ने भी वहीं कहीं पास से निकलना था। जब महिला ट्रक में चढ़ने लगी, तब मेरा रोना ही छूट गया। मैनें उसे मुझे भी अपने साथ ले चलने की विनती की। मेरी रुलाई देख कर उस ने मुझे अपने साथ ले लिया। आए दिन समाचार पत्रों, टी० वी० इत्यादि की खबरें पढ़ -सुनकर तथा फिल्मों के कारण ट्रक ड्राईवरों की एक गलत छवि मेरे दिमाग में बनी हुई थी। मन में एक डर था लेकिन मेरे पास उस महिला के साथ ट्रक में बैठने के सिवा कोई चारा न था। अन्धेरा घिरने लगा था मैं हालात के आगे विवश थी। लेकिन ट्रक में बैठ कर उस दिन मेरा वह भ्रम दूर हो गया, उस दिन मैं पहली बार और अभी तक आखिरी बार उस ट्रक में सवार हुई थी। वह ट्रक चालक एक बड़ा ही भला - मानस हिमाचली था। उस ट्रक - चालक ने हमें शहर के बाहर ही नेशनल हाईवे पर उतार दिया । अब घुप अन्धेरा हो चुका था लेकिन मुझे अगली बस अम्बाला कैंट से मिलनी थी जब कि उस महिला ने दूसरी दिशा में जाना था मैं इतना अधिक डर गई थी कि अकेले अलग दिशा में जाने की हिम्मत नहीं थी उस महिला ने मुझे अपने साथ चलने का न्यौता दिया, मैं बिना सोचे-समझे उस के साथ चल पड़ी। थोड़ी दूर जाकर उसने अपने रिश्तेदार के घर चलने के लिए रिक्शा लिया। वहाँ पहुँच कर पता चला कि वह एक सिक्ख परिवार था तथा वह महिला चण्डीगढ़ में वेरका मिल्क कंपनी की कर्मचारी थी जोकि अगले दिन कम्पनी के किसी आफिशियल दौरे के लिए अम्बाला आई थी तथा वह रिश्तेदार उस का भाई था। वे लोग बड़े उदार एवं विनम्र स्वभाव के थे। उन्होंने मेरे से पूछा कि कोई कांटेक्ट नम्बर है तो घरवालों से फोन पर बात कर लो लेकिन मैनें घर में लैंडलाईन फोन होते हुए भी कोई कांटेक्ट नम्बर होने से इन्कार कर दिया, मन में एक डाँट का भय भी था और उससे भी बढ़कर किसी अनजान घर में रहने का सोच कर उनकी परेशानी का ख्याल था।

मेरी सारी रात करवटें लेते बीती, सुबह होते ही मैंने चलने को कहा तो उन्होंने कहा कि पहले नाश्ता कर लो, हमारा बेटा तुम्हें अम्बाला कैंट जाकर तुम्हारे शहर जाने वाली बस में बिठा आएगा।

मैं सुबह नौ बजे के करीब ही अपने घर पहुंच गई, घरवाले भी मुझे सुबह के समय ही घर पर देख कर हैरान रह गए। मैं अपनी माँ से लिपट कर खूब रोई तथा पिछले दिन का पूरा घटनाक्रम सुनाया। फिर तो हम माँ - बेटी दोनों रोई तथा पिताजी भी अपने आँसू नहीं रोक पाए।

आज इकतीस वर्ष बीत जाने के बाद भी मैं उन सब लोगों का चेहरा नहीं भूल पाई हूँ, मैं उन सब की हमेशा ऋणी रहूंगी। उस दिन मेरे मन में ट्रक चालकों तथा सिक्खों के प्रति डर की जो छवि बनी थी वह मिट चुकी थी तथा मैंने जान लिया था कि सभी लोगों को एक तराजू में नहीं तोल सकते तथा एक बहुत बड़ी सीख भी। इसके उपरान्त मैंने हमेशा अपनी यात्रा, पूरी तरह समय का विश्लेषण करके की, यह घर पहुंचने की जल्दबाज़ी मुझ पर भारी भी पड़ सकती थी।



समता खानचंदानी
(क.हि.अ.)

प्रकृति

अपने सौंदर्य पर इठलाते हुए
जब चंद्र ने
देव का उपहास किया
और मूषक ने उसे कुतरना प्रारंभ किया,
प्रकृति ने उनकी चौंसठ कलाओं के सोलह दिनों में
किसी मेनका की भांति
चुपचाप श्रृंगार किया!
शिला ने जब पुनः अहिल्या की देह पाई
और गौतम ने
अपनी ग्लानि गंगा में बहाई,
प्रकृति ने अपने प्रचंड आवेग से
हिमालय एक खंड
पथ छिन्न किया!
कंस वध को निश्चित मान
जब कृष्ण ने
मथुरा की ओर गमन किया
और राधा ने अपने रिक्त हाथों से
अश्रुओं का अर्ध्य दिया,
प्रकृति ने उसके विरह से
सम्पूर्ण द्वारिका को जल मग्न किया !
अपने सोलह श्रृंगार से अलंकृत
वह प्रकृति,
नई आकाशगंगाओं को खोजते
मनुष्य की श्वास में
जब अदृश्य जीव से संहार रचती है,
मिटटी सने बच्चों की कोई टोली
अपनी फटी कमीज़ की आस्तीन से
प्रकृति का मुख पोंछती है
और फिर वो उर्वशी
अपने क़दम पीछे खींचती है !!

(हिन्दी पखवाड़ा-२०२१ में कविता पाठ प्रतियोगिता की प्रथम पुरस्कार प्राप्त रचना)

वर्ष 2021–22 में सेवा निवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी (ले0व ह0)

क्रम	सं0सर्वश्री/श्रीमती	पदनाम	सेवानिवृत्ति
1.	मोहन सिंह ठाकुर	सहायक लेखा अधिकारी	30–04–2021
2.	श्याम लाल बारपा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30–04–2021
3.	मधु बाला बंसल	पर्यवेक्षक	31–05–2021
4.	विरेन्द्रर रमोला	पर्यवेक्षक	31–05–2021
5.	राजपाल	वरिष्ठलेखाकार	30–06–2021
6.	अजय कालिया	पर्यवेक्षक	31–07–2021
7.	पुरूषोत्तम दास	वरिष्ठलेखाकार	31–07–2021
8.	नेकराम वर्मा	पर्यवेक्षक	31–08–2021
9.	हीरा लाल	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30–09–2021
10.	रतनचन्द	वरिष्ठलेखाकार	30–09–2021
11.	अमर नाथ	वरिष्ठलेखाकार	31–10–2021
12.	सुरेन्द्र कुमार	पर्यवेक्षक	31–10–2021
13.	राकेश चन्द्र पाण्डे	वरिष्ठ लेखाकार	31–10–2021
14.	सुदेश कुमार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31–12–2021
15.	राम रतन मलिक	पर्यवेक्षक	31–12–2021
16.	भूपेंद्र सिंह ठाकुर	पर्यवेक्षक	31–12–2021
17.	अशोक हरीश	सहायक पर्यवेक्षक	31–01–2022
18.	फींता राम वर्मा	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31–01–2022
19.	प्रकाश चन्द मैहता	सहायक लेखा अधिकारी	28–02–2022
20.	प्रकाश चन्द	वरिष्ठ लेखाकार	28–02–2022
21.	नीना शर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	28–02–2022
22.	राकेश कुमार सूद	पर्यवेक्षक	28–02–2022
23.	उमा लाल	सहायक लेखा अधिकारी	28–02–2022
24.	विनोद कुमार राणा	सहायक पर्यवेक्षक	31–03–2022
25.	प्रकाश दत्त शर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	31–03–2022
26.	गोपाल कृष्ण शर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	31–03–2022
27.	जगत सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31–03–2022
28.	अमर देव	वरिष्ठ लेखाकार	31–03–2022
29.	दीपक राज गुप्ता	सहायक लेखा अधिकारी	31–03–2022

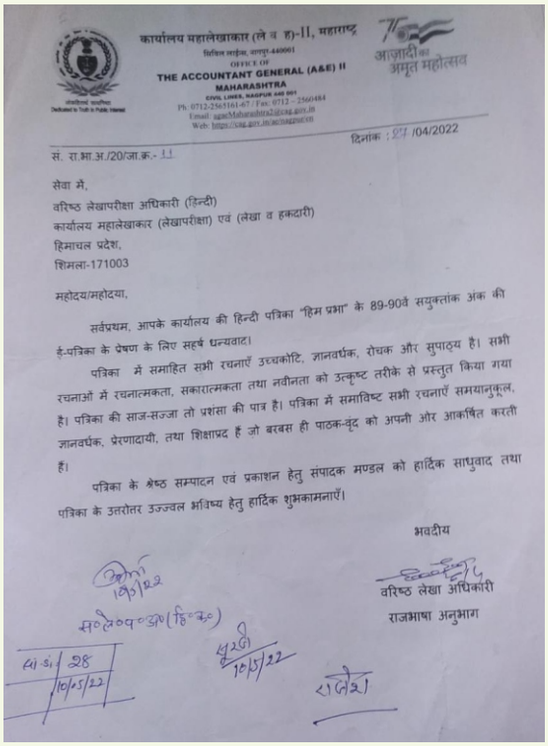
वर्ष 2021–22 में सेवा निवृत्त हुए अधिकारी / कर्मचारी (लेखापरीक्षा)			
क्रम	**सर्वश्री / श्रीमती**	**पदनाम**	**सेवानिवृत्ति**
1.	बाबू राम	सहायक हलवाई	31–05–2021
2.	ब्रज लाल	हलवाई	30–06–2021
3.	ओम प्रकाश	पर्यवेक्षक	31–07–2021
4.	हरबंस लाल	वरिष्ठ लेखापरीक्षक	30–09–2021
5.	विनोद पीटर	कल्याण अधिकारी	30–11–2021
6.	जय सिंह	पर्यवेक्षक	30–11–2021
7.	विजय कृष्ण शर्मा	सहायक पर्यवेक्षक	31–12–2021
8.	जीत राम	सहायक पर्यवेक्षक	31–01–2022
9.	कल्याण चंद	सहायक पर्यवेक्षक	31–01–2022
10.	विशाल मरवाह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	10–03–2022 (स्वैच्छिक सेवानिवृत)

हिन्दी पखवाड़ा 2021

प्रतियोगिता परिणाम

प्रतियोगिता	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
1. अनुवाद	सुदर्शन, स.ले.प.अ.	योगेश, स.ले.प.अ.	दयासागर व.ले.प.
2. वाद–विवाद	शैलेश सोनी, स.ले.प.अ.	योगेश स.ले.प.अ.	राहुल पुंज, एम.टी.एस.
3. आशु भाषण	राहुल पुंज, एम.टी.एस.	शैलेश सोनी, स.ले.प.अ.	अरूण कुमार, डी.इ.ओ.
4. श्रुतलेख	उज्जवल कुमार एम.टी.एस.	अमित वर्मा, स.ले.प.अ.	आयुषी बरनवाल, स.ले.प.अ.
5. कविता–पाठ	समता खानचंदानी, क.हि.अ.	शैलेश सोनी, स.ले.प.अ.	कीर्ति चतुर्वेदी व.ले.का.
6. निबंध	अरूण कुमार, डी.इ.ओ.	सुदर्शन शर्मा, स.ले.प.अ.	दयासागर व.ले.प.
7. टिप्पण–आलेख	दयासागर व.ले.प.	मुकेंद्र कुमार, स.ले.प.अ.	संजीत कुमार, स.ले.प.अ.
8. कम्प्यूटर (यूनिकोड) पर टंकण	अजय सिंह, डी.इ.ओ.	प्रमोद वर्मा, ले.प.	सत्यवती, स. पर्य.
9. चित्र–लेखन	उज्जवल कुमार एम.टी.एस.	सीमा सहोता, स.ले.अ.	योगेश, स.ले.प.अ.

हिम-प्रभा - 2021 पर प्रतिक्रियाएं



कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र
THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) II
MAHARASHTRA

सं. रा.भा.अ./20/जा.क्र.- 11 दिनांक : 01/04/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश,
शिमला-171003

महोदय/महोदया,

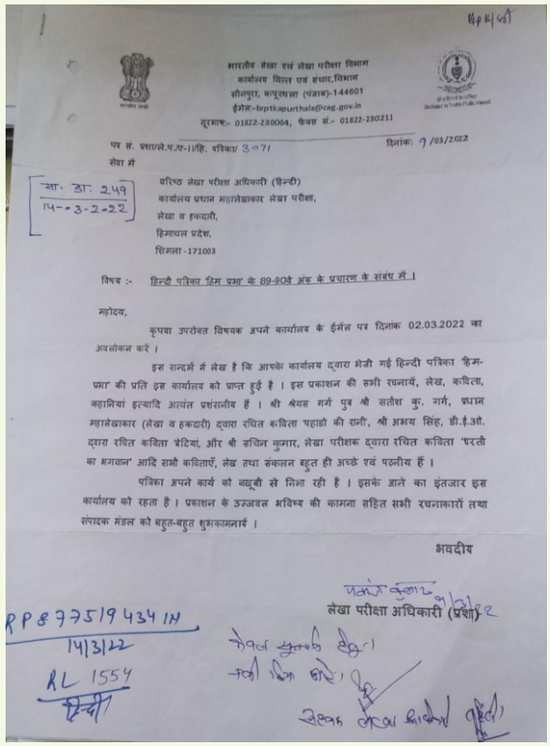
सर्वप्रथम, आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें सयुक्तांक अंक की ई-पत्रिका के प्रेषण के लिए सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि, ज्ञानवर्धक, रोचक और सुपाठ्य है। सभी रचनाओं में रचनात्मकता, सकारात्मकता तथा नवीनता को उत्कृष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका की साज-सज्जा तो प्रशंसा की पात्र है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ समयानुकूल, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी, तथा शिक्षाप्रद हैं जो बरबस ही पाठक-वृंद को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक साधुवाद तथा पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग



भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय वित्त एवं संचार,विभाग
सोनपुरा, कण्डाघाट (पंजाब)-144601
ई-मेल:-brptkapurthala@cag.gov.in
दूरभाष:- 01822-230004, फैक्स सं.- 01822-230211

पत्र सं. प्रशा/ले.प.प्र.-I/हि. पत्रिका/ 307 दिनांक: 7/03/2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार लेखा परीक्षा,
लेखा व हकदारी,
हिमाचल प्रदेश,
शिमला-171003

विषय :- हिन्दी पत्रिका 'हिम प्रभा' के 89-90वें अंक के प्रकाशन के संबंध में।

महोदय,

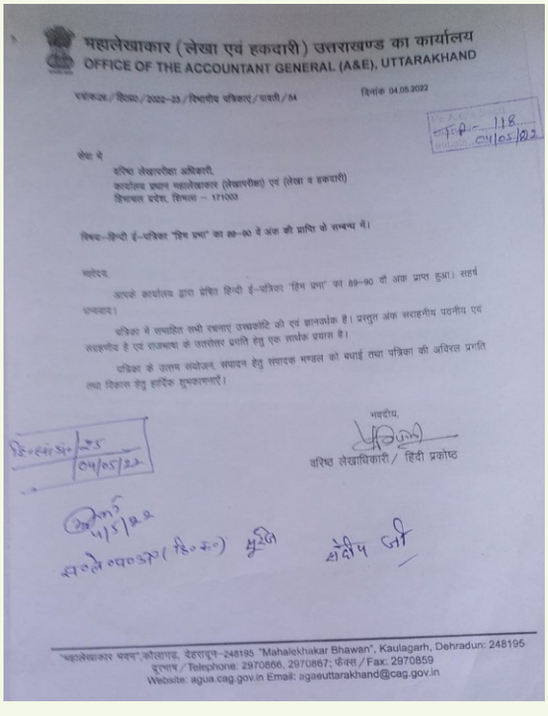
कृपया उपरोक्त विषयक अपने कार्यालय के ईमेल पत्र दिनांक 02.03.2022 का अवलोकन करें।

इस सन्दर्भ में लेख है कि आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका 'हिम-प्रभा' की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। इस प्रकाशन की सभी रचनायें, लेख, कवितायें, कहानियां इत्यादि अत्यंत प्रशंसनीय हैं। श्री श्रेयस गर्ग पुत्र श्री सतीश कु. गर्ग, प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) द्वारा रचित कविता पहाडो की रानी, श्री अभय सिंह, डी.ई.ओ. द्वारा रचित कविता 'बेटियां, और श्री रुचिन कुमार, लेखा परीक्षक द्वारा रचित कविता 'धरती का भगवान' आदि सभी कवितायें, लेख तथा संकलन बहुत ही अच्छे एवं पठनीय हैं।

पत्रिका अपने कार्य को बखूबी से निभा रही है। इसके आने का इंतजार इस कार्यालय को रहता है। प्रकाशन के उज्जवल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय

लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशा)



महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड का कार्यालय
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), UTTARAKHAND

प्रधाकम./हिन्दी/2022-23/विशेषांक पत्रिका/सारी/84 दिनांक 04.05.2022

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला – 171003

विषय–हिन्दी ई–पत्रिका "हिम प्रभा" का 89–90 वें अंक की प्राप्ति पे सम्बन्ध में।

महोदय,

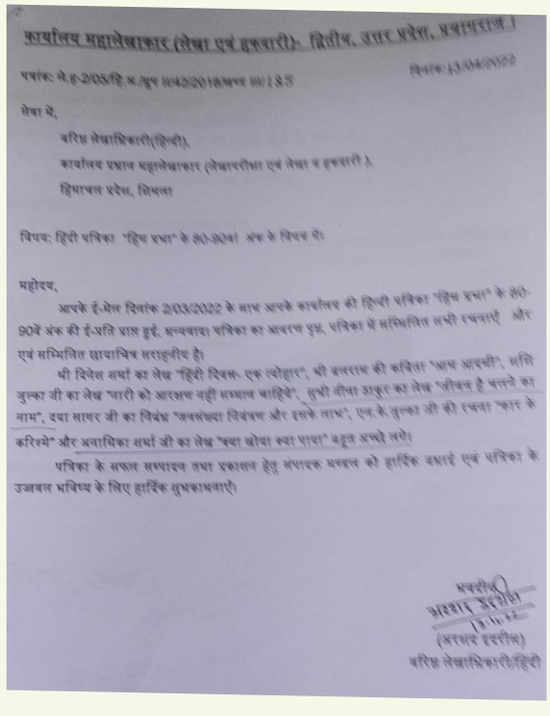
आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई–पत्रिका "हिम प्रभा" का 89–90 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखाधिकारी / हिंदी प्रकोष्ठ

"महालेखाकार भवन",कौलागढ़, देहरादून–248195 "Mahalekhakar Bhawan", Kaulagarh, Dehradun: 248195
दूरभाष / Telephone: 2970866, 2970867; फैक्स / Fax: 2970859
Website: agua.cag.gov.in Email: agaeuttarakhand@cag.gov.in



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), द्वितीय, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

पत्रांक: ले.ह-2/05/हि.प./पृष्ठ II/42/2018/भाग III/185 दिनांक 13/04/2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखाधिकारी(हिन्दी),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय: हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें अंक के विषय में।

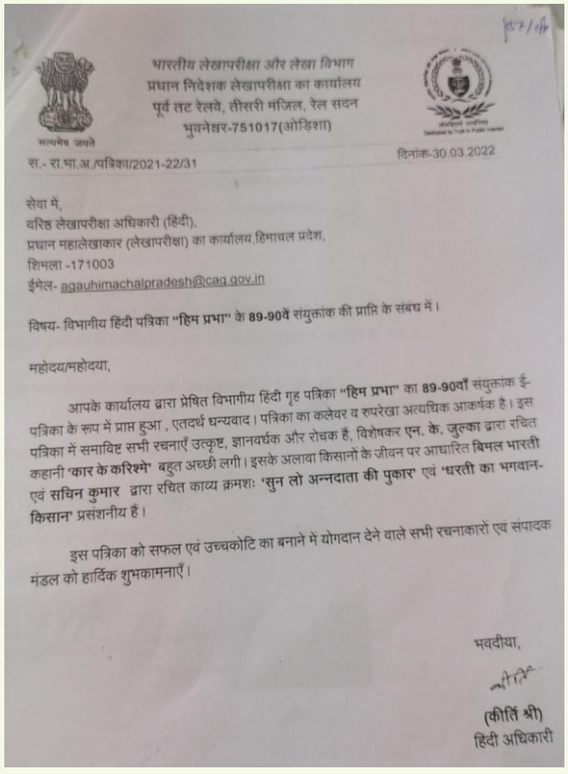
महोदय,

आपके ई-मेल दिनांक 2/03/2022 के साथ आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद पत्रिका का आवरण पृष्ठ, पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ और एवं सम्मिलित सामाजिक सरोकारीय है।

श्री दिनेश शर्मा का लेख "हिंदी दिवस- एक त्योहार", श्री बलराम की कविता "भ्रम आदमी", सरि जुल्का जी का लेख "पारी को आरक्षण नहीं समाप्त चाहिये", सुश्री दीपा ठाकुर का लेख "जीवन है चलने का नाम", दया सागर जी का विशेष "जनसंख्या नियंत्रण और इसके लाभ", एन.के.जुल्का जी की रचना "कार के करिश्मे" और अनामिका शर्मा जी का लेख "क्या खोया क्या पाया" बहुत अच्छे लगे।

पत्रिका के सफल सम्पादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
(अरशद इदरीस)
वरिष्ठ लेखाधिकारी(हिंदी)



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन
भुवनेश्वर-751017(ओड़िशा)

सत्यमेव जयते

स.- रा.भा.अ./पत्रिका/2021-22/31 दिनांक-30.03.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय,हिमाचल प्रदेश,
शिमला -171003
ईमेल- agauhimachalpradesh@cag.gov.in

विषय- विभागीय हिंदी पत्रिका **"हिम प्रभा"** के **89-90वें** संयुक्तांक की प्राप्ति के संबंध में।

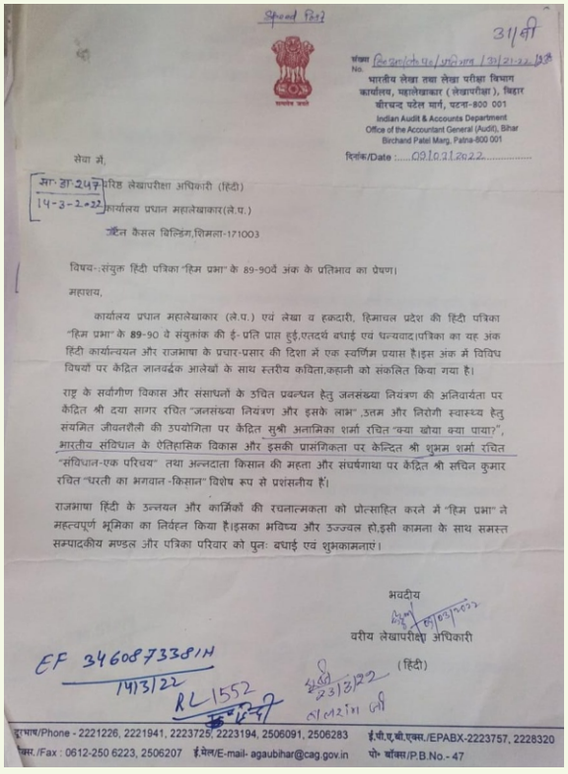
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **"हिम प्रभा"** का **89-90वाँ** संयुक्तांक ई-पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ , एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर **एन. के. जुल्का** द्वारा रचित कहानी **'कार के करिश्मे'** बहुत अच्छी लगी। इसके अलावा किसानों के जीवन पर आधारित **बिमल भारती** एवं **सचिन कुमार** द्वारा रचित काव्य क्रमशः **'सुन लो अन्नदाता की पुकार'** एवं **'धरती का भगवान-किसान'** प्रसंशनीय हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी



Speed Post

संख्या No. Hin Prabha/Pat/Vibhag / 20/21-22/38

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार
बीरचन्द पटेल मार्ग, पटना-800 001
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Accountant General (Audit), Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800 001

दिनांक/Date :...09.03.2022.....

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(ले.प.)
जैकेन कैसल बिल्डिंग,शिमला-171003

विषय:-संयुक्त हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें अंक के प्रतिभाव का प्रेषण।

महाशय,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.) एवं लेखा व हकदारी, हिमाचल प्रदेश की हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90 वे संयुक्तांक की ई- प्रति प्राप्त हुई,एतदर्थ बधाई एवं धन्यवाद।पत्रिका का यह अंक हिंदी कार्यान्वयन और राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है।इस अंक में विविध विषयों पर केंद्रित ज्ञानवर्द्धक आलेखों के साथ स्तरीय कविता,कहानी को संकलित किया गया है।

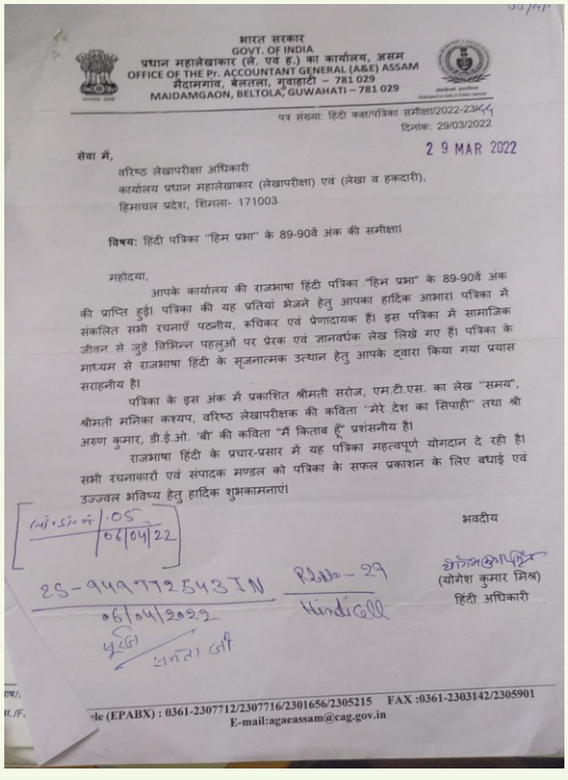
राष्ट्र के सर्वांगीण विकास और संसाधनों के उचित प्रबन्धन हेतु जनसंख्या नियंत्रण की अनिवार्यता पर केंद्रित श्री दया सागर रचित "जनसंख्या नियंत्रण और इसके लाभ",उत्तम और निरोगी स्वास्थ्य हेतु संयमित जीवनशैली की उपयोगिता पर केंद्रित सुश्री अनामिका शर्मा रचित "क्या खोया क्या पाया?", भारतीय संविधान के ऐतिहासिक विकास और इसकी प्रासंगिकता पर केन्द्रित श्री शुभम शर्मा रचित "संविधान-एक परिचय" तथा अन्नदाता किसान की महत्ता और संघर्षगाथा पर केंद्रित श्री सचिन कुमार रचित "धरती का भगवान-किसान" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

राजभाषा हिंदी के उन्नयन और कार्मिकों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में "हिम प्रभा" ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।इसका भविष्य और उज्ज्वल हो,इसी कामना के साथ समस्त सम्पादकीय मण्डल और पत्रिका परिवार को पुनः बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय
वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी)

EF 346087338IN
14/3/22
RL 1552

दूरभाष/Phone - 2221226, 2221941, 2223725, 2223194, 2506091, 2506283 ई.पी.ए.बी.एक्स./EPABX-2223757, 2228320
फैक्स./Fax : 0612-250 6223, 2506207 ई.मेल/E-mail- agaubihar@cag.gov.in पो॰ बॉक्स/P.B.No.- 47



भारत सरकार
GOVT. OF INDIA
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, असम
OFFICE OF THE Pr. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) ASSAM
मैदामगांव, बेलतला, गुवाहाटी – 781 029
MAIDAMGAON, BELTOLA, GUWAHATI – 781 029

पत्र संख्या: हिंदी कथा/पत्रिका समीक्षा/2022-23/54
दिनांक: 29/03/2022

29 MAR 2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं (लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश, शिमला- 171003

विषय: हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें अंक की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की यह प्रतियां भेजने हेतु आपका हार्दिक आभारा पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित श्रीमती सरोज, एम.टी.एस. का लेख "समय", श्रीमती मनिका कश्यप, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की कविता "मेरे देश का सिपाही" तथा श्री अरुण कुमार, डी.ई.ओ. 'बी' की कविता "मैं किताब हूँ" प्रशंसनीय है।

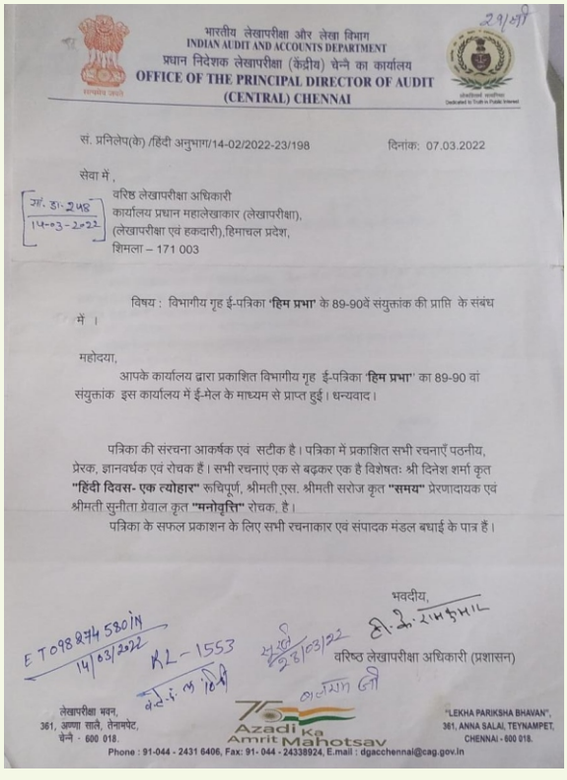
राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

(योगेश कुमार मिश्र)
हिंदी अधिकारी

ES-944772543IN
06/04/2022
Rs.20-29
HindiCell

le (EPABX) : 0361-2307712/2307716/2301656/2305215 FAX :0361-2303142/2305901
E-mail:agaeassam@cag.gov.in



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सं. प्रनिलेप(के) /हिंदी अनुभाग/14-02/2022-23/198 दिनांक: 07.03.2022

सेवा में ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
(लेखापरीक्षा एवं हकदारी),हिमाचल प्रदेश,
शिमला – 171 003

विषय : विभागीय गृह ई-पत्रिका **'हिम प्रभा'** के 89-90वें संयुक्तांक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय गृह ई-पत्रिका **'हिम प्रभा'** का 89-90 वां संयुक्तांक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है विशेषतः श्री दिनेश शर्मा कृत **"हिंदी दिवस- एक त्योहार"** रूचिपूर्ण, श्रीमती एस. श्रीमती सरोज कृत **"समय"** प्रेरणादायक एवं श्रीमती सुनीता ग्रेवाल कृत **"मनोवृत्ति"** रोचक, है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

भवदीय,

ET098274580IN
14/03/2022
RL – 1553

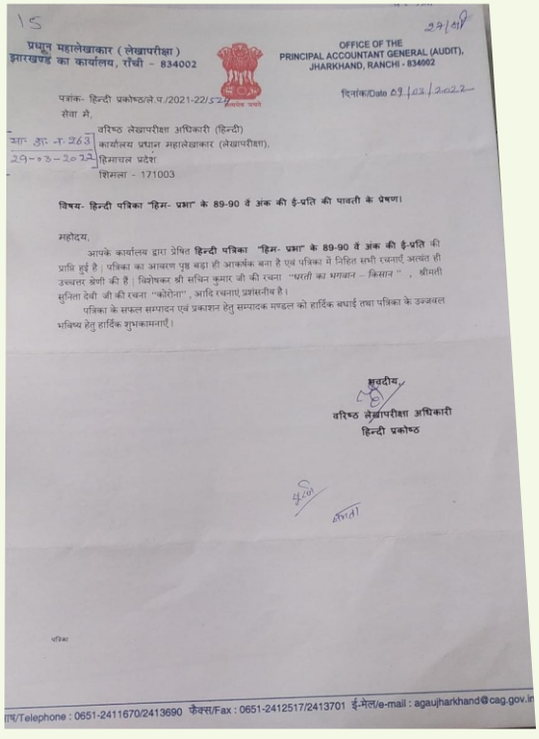
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

लेखापरीक्षा भवन,
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट,
चेन्नै - 600 018.

Azadi Ka Amrit Mahotsav

"LEKHA PARIKSHA BHAVAN",
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET,
CHENNAI - 600 018.

Phone : 91-044 - 2431 6406, Fax: 91- 044 - 24338924, E.mail : dgacchennai@cag.gov.in



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची - 834002

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
JHARKHAND, RANCHI - 834002

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2021-22/527 दिनांक/Date 29/03/2022

सेवा मे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश
शिमला - 171003

विषय- हिन्दी पत्रिका "हिम- प्रभा" के 89-90 वें अंक की ई-प्रति की पावती के प्रेषण।

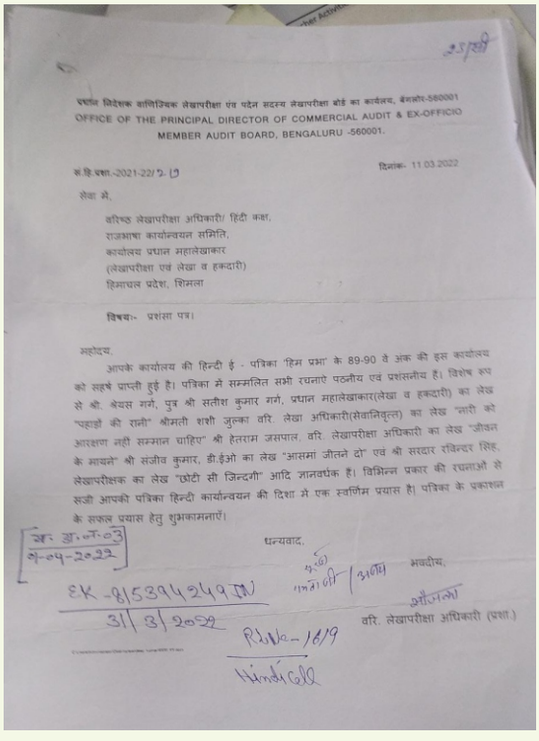
महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **हिन्दी पत्रिका "हिम- प्रभा" के 89-90 वें अंक की ई-प्रति** की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चस्तर श्रेणी की हैं। विशेषकर श्री सचिन कुमार जी की रचना "धरती का भगवान – किसान" , श्रीमती सुनिता देवी जी की रचना "कोरोना" , आदि रचनाएं प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

दूरभाष/Telephone : 0651-2411670/2413690 फैक्स/Fax : 0651-2412517/2413701 ई-मेल/e-mail : agaujharkhand@cag.gov.in



प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF COMMERCIAL AUDIT & EX-OFFICIO
MEMBER AUDIT BOARD, BENGALURU -560001.

ई.हि.प्रभा-2021-22/2-17 दिनांक- 11.03.2022

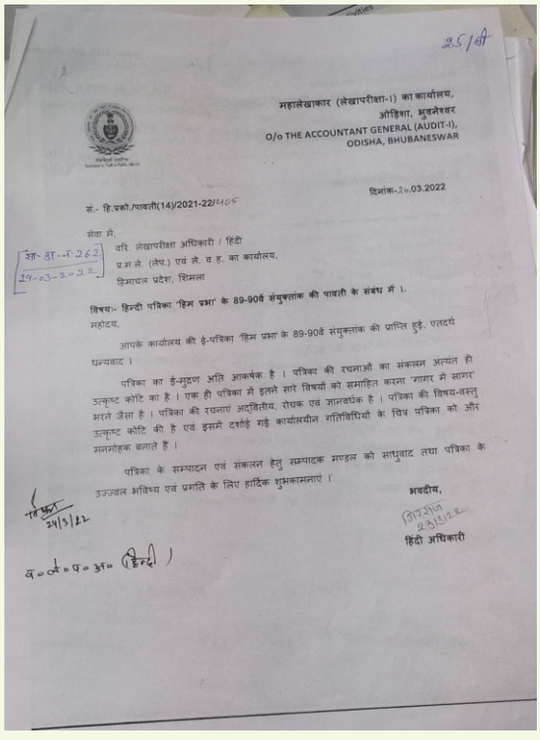
सेवा मे,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी कक्ष,
राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय:- प्रशंसा पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई - पत्रिका 'हिम प्रभा' के 89-90 वें अंक की इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्ती हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री. केवल गर्ग, पुत्र श्री सतीश कुमार गर्ग, प्रधान महालेखाकार(लेखा व हकदारी) का लेख "पहाड़ों की रानी" श्रीमती शशी जुल्का वरि. लेखा अधिकारी(सेवानिवृत्त) का लेख "नारी को आरक्षण नहीं सम्मान चाहिए" श्री हेतराम जसपाल, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख "जीवन के आयने" श्री संजीव कुमार, डी.ईओ का लेख "आसमां जीतने दो" एवं श्री सरदार रविन्दर सिंह, लेखापरीक्षक का लेख "छोटी सी जिन्दगी" आदि ज्ञानवर्धक हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,
भवदीय,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)



महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,
ओड़िशा, भुवनेश्वर
O/o THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
ODISHA, BHUBANESWAR

सं.- हि.प्रको./पावती(14)/2021-22/1405 दिनांक-24.03.2022

सेवा में,
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी
प्र.म.ले. (लेप.) एवं ले. व ह. का कार्यालय,
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय:- हिन्दी पत्रिका 'हिम प्रभा' के 89-90वें संयुक्तांक की पावती के संबंध में।

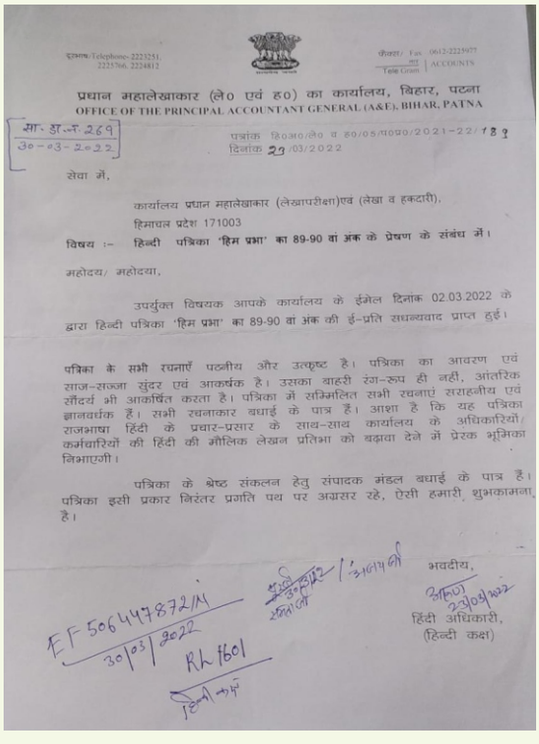
महोदय,

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका 'हिम प्रभा' के 89-90वें संयुक्तांक की प्राप्ति हुई, एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका का ई-मुद्रण अति आकर्षक है। पत्रिका की रचनाओं का संकलन अत्यंत ही उत्कृष्ट कोटि का है। एक ही पत्रिका में इतने सारे विषयों को समाहित करना 'गागर में सागर' भरने जैसा है। पत्रिका की रचनाएं अद्वितीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका की विषय-वस्तु उत्कृष्ट कोटि की है एवं इसमें दर्शाई गई कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका को और मनमोहक बनाते हैं।

पत्रिका के सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादक मण्डल को साधुवाद तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी



दूरभाष/Telephone- 2223251, 2225766, 2224812 फैक्स/ Fax 0612-2225977 ACCOUNTS Tele Gram

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हि०प्र०/ले० व ह०/05/प्र०प०/2021-22/189
दिनांक 29/03/2022

सेवा में,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)एवं (लेखा व हकदारी),
हिमाचल प्रदेश 171003

विषय :- **हिन्दी पत्रिका 'हिम प्रभा' का 89-90 वां अंक के प्रेषण के संबंध में।**

महोदय/ महोदया,

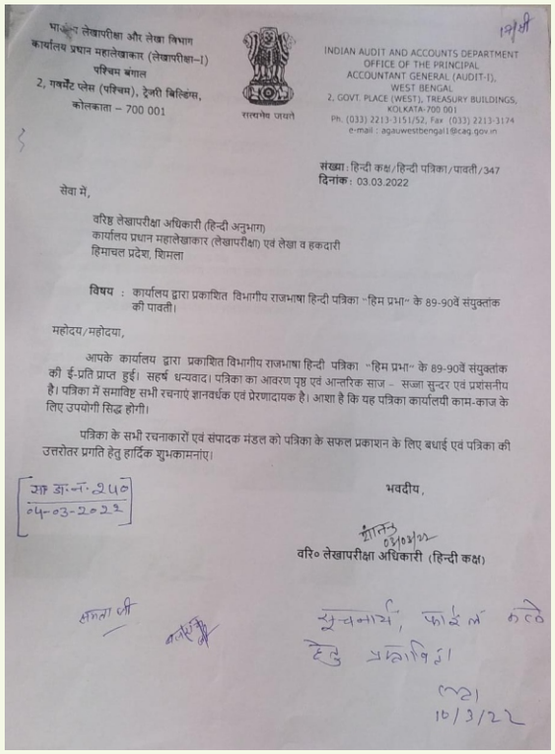
उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 02.03.2022 के द्वारा हिन्दी पत्रिका 'हिम प्रभा' का 89-90 वां अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका के सभी रचनाएँ पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं आकर्षक है। उसका बाहरी रंग-रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

हिम – प्रभा



भारत के लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax: (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या : हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/347
दिनांक : 03.03.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी अनुभाग)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं लेखा व हकदारी
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय : कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें संयुक्तांक की पावती।

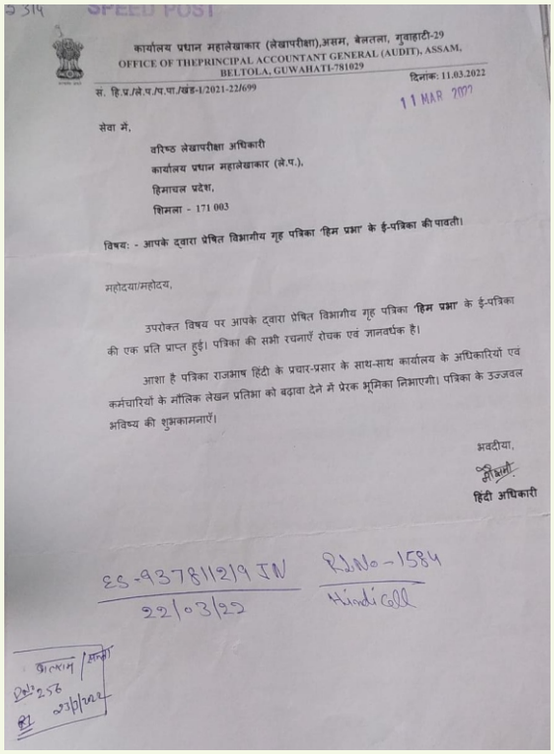
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय राजभाषा हिन्दी पत्रिका "हिम प्रभा" के 89-90वें संयुक्तांक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक है। आशा है कि यह पत्रिका कार्यालयी काम-काज के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनांए।

भवदीय,

वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),असम, बेलतला, गुवाहाटी-29
OFFICE OF THEPRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), ASSAM,
BELTOLA, GUWAHATI-781029

सं. हि.प./से.प./प.पा./खंड-1/2021-22/699 दिनांक: 11.03.2022

11 MAR 2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.),
हिमाचल प्रदेश,
शिमला - 171 003

विषय: - आपके द्वारा प्रेषित विभागीय गृह पत्रिका 'हिम प्रभा' के ई-पत्रिका की पावती।

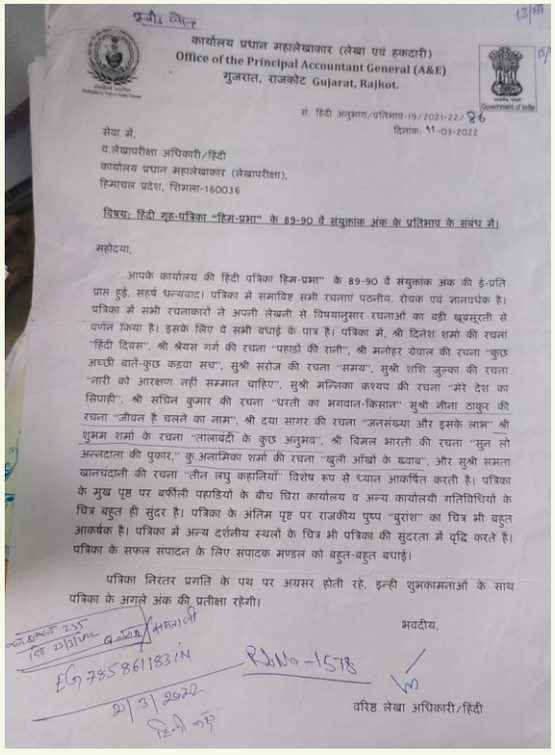
महोदया/महोदय,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित विभागीय गृह पत्रिका **'हिम प्रभा'** के ई-पत्रिका की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका की सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

आशा है पत्रिका राजभाष हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
Office of the Principal Accountant General (A&E)
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

सं. हिंदी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2021-22/ 76 दिनांक: 11-03-2022

सेवा में,
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हिमाचल प्रदेश, शिमला-160036

विषय: हिंदी गृह-पत्रिका "हिम-प्रभा" के 89-90 वें संयुक्तांक अंक के प्रतिभाव के संबंध में।

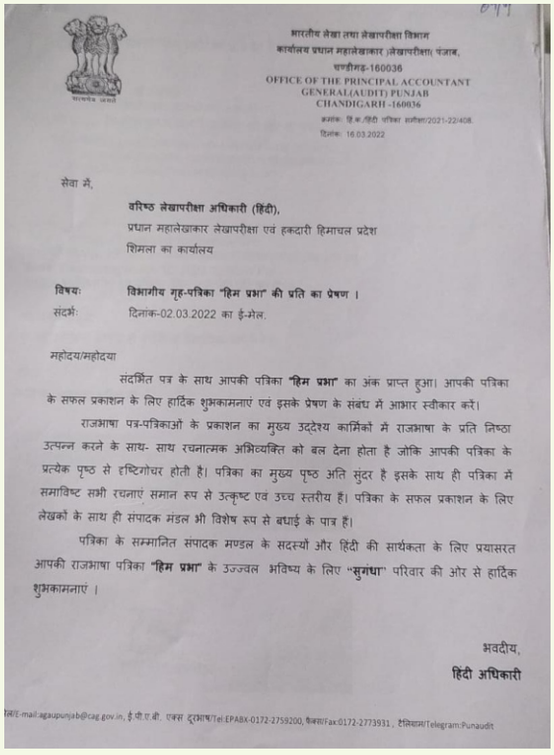
महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका हिम-प्रभा" के 89-90 वें संयुक्तांक अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बडी खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में, श्री दिनेश शर्मा की रचना "हिंदी दिवस", श्री श्रेयस गर्ग की रचना "पहाडों की रानी", श्री मनोहर थ्यालन की रचना "कुछ अच्छी बातें-कुछ कडवा सच", सुश्री सरोज की रचना "समय", सुश्री शशि जुल्का की रचना "नारी को आरक्षण नहीं सम्मान चाहिए", सुश्री मन्निका कश्यप की रचना "मेरे देश का सिपाही", श्री सचिन कुमार की रचना "धरती का भगवान-किसान" सुश्री नीना ठाकुर की रचना "जीवन है चलने का नाम", श्री दया सागर की रचना "जनसंख्या और इसके लाभ" श्री शुभम शर्मा के रचना "तालाबंदी के कुछ अनुभव", श्री विमल भारती की रचना "सुन लो अन्नदाता की पुकार," कु.अनामिका शर्मा की रचना "खुली आँखों के ख्वाब", और सुश्री समता खानचंदानी की रचना "तीन लघु कहानियाँ" विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर बर्फीली पहाडियों के बीच चिरा कार्यालय व अन्य कार्यालयी गतिविधियों के चित्र बहुत ही सुंदर है। पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर राजकीय पुष्प "बुरांश" का चित्र भी बहुत आकर्षक है। पत्रिका में अन्य दर्शनीय स्थलों के चित्र भी पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी



भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चण्डीगढ़-160036
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT) PUNJAB
CHANDIGARH -160036

क्रमांक: हि.अ./हिंदी पत्रिका शर्मा/2021-22/408
दिनांक: 16.03.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी),
प्रधान महालेखाकार लेखापरीक्षा एवं हकदारी हिमाचल प्रदेश
शिमला का कार्यालय

विषय: **विभागीय गृह-पत्रिका "हिम प्रभा" की प्रति का प्रेषण ।**
संदर्भ: दिनांक-02.03.2022 का ई-मेल.

महोदय/महोदया

संदर्भित पत्र के साथ आपकी पत्रिका **"हिम प्रभा"** का अंक प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

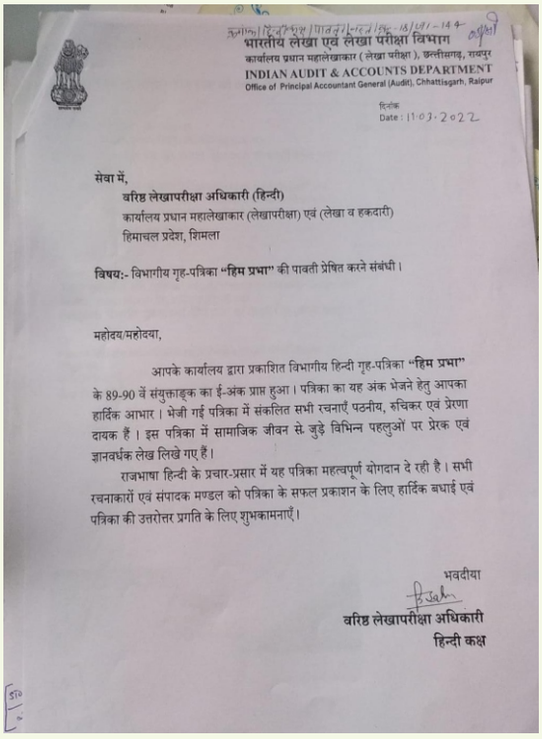
राजभाषा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के साथ- साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति को बल देना होता है जोकि आपकी पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ से दृष्टिगोचर होती है। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अति सुंदर है इसके साथ ही पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं समान रूप से उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए लेखकों के साथ ही संपादक मंडल भी विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका **"हिम प्रभा"** के उज्ज्वल भविष्य के लिए **"सुगंधा"** परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

E-mail:agaupunjab@cag.gov.in, ई.पी.ए.बी.एक्स दूरभाष/Tel:EPABX-0172-2759200, फैक्स/Fax:0172-2773931, टेलिग्राम/Telegram:Punaudit



भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit), Chhattisgarh, Raipur

दिनांक
Date : 11.03.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय:- विभागीय गृह-पत्रिका **"हिम प्रभा"** की पावती प्रेषित करने संबंधी।

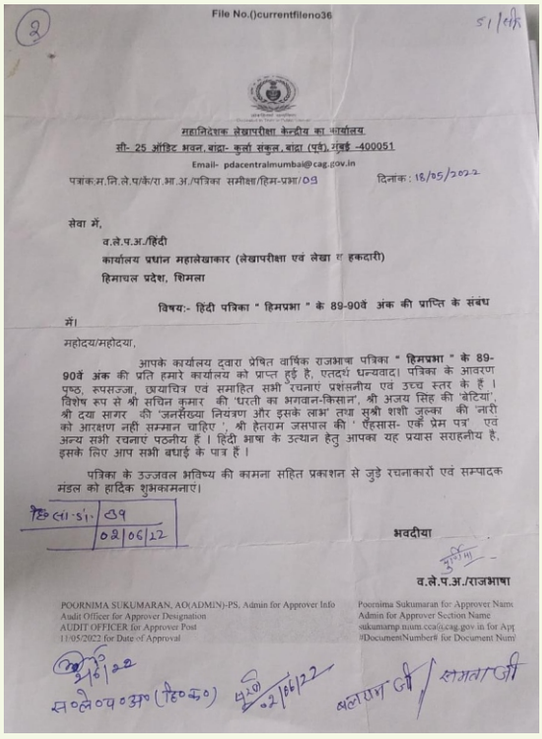
महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभागीय हिन्दी गृह-पत्रिका **"हिम प्रभा"** के 89-90 वें संयुक्ताङ्क का ई-अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष



File No.()currentfileno36

महानिदेशक लेखापरीक्षा केन्द्रीय का कार्यालय
सी- 25 ऑडिट भवन, बांद्रा- कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व), मुंबई -400051
Email- pdacentralmumbai@cag.gov.in

पत्रांक:म.नि.ले.प/के/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/हिम-प्रभा/09 दिनांक : 18/05/2022

सेवा में,
व.ले.प.अ./हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय:- हिंदी पत्रिका " हिमप्रभा " के 89-90वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक राजभाषा पत्रिका **" हिमप्रभा " के 89-90वें अंक** की प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ, रूपसज्जा, छायाचित्र एवं समाहित सभी रचनाएं प्रशंसनीय एवं उच्च स्तर के हैं। विशेष रूप से श्री सचिन कुमार की 'धरती का भगवान-किसान', श्री अजय सिंह की 'बेटियां', श्री दया सागर की 'जनसंख्या नियंत्रण और इसके लाभ' तथा सुश्री शशी जुल्का की 'नारी को आरक्षण नहीं सम्मान चाहिए ', श्री हेतराम जसपाल की ' एैहसास- एक प्रेम पत्र' एवं अन्य सभी रचनाएं पठनीय हैं। हिंदी भाषा के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

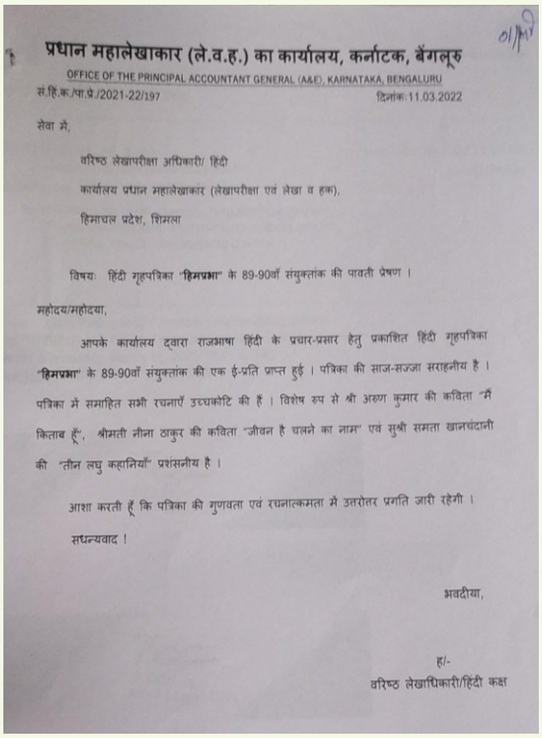
पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

व.ले.प.अ./राजभाषा

POORNIMA SUKUMARAN, AO(ADMIN)-PS, Admin for Approver Info
Audit Officer for Approver Designation
AUDIT OFFICER for Approver Post
11/05/2022 for Date of Approval

Poornima Sukumaran for Approver Name
Admin for Approver Section Name
sukumarnp.nom.ca@cag.gov.in for Appr
#DocumentNumber# for Document Num



प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय, कर्नाटक, बेंगलूरु
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KARNATAKA, BENGALURU

सं.हि.क./पा.पे./2021-22/197 दिनांक: 11.03.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा एवं लेखा व हक),

हिमाचल प्रदेश, शिमला

विषय: हिंदी गृहपत्रिका **"हिमप्रभा"** के 89-90वाँ संयुक्तांक की पावती प्रेषण ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी गृहपत्रिका **"हिमप्रभा"** के 89-90वाँ संयुक्तांक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका की साज-सज्जा सराहनीय है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चकोटि की हैं । विशेष रुप से श्री अरुण कुमार की कविता "मैं किताब हूँ", श्रीमती नीना ठाकुर की कविता "जीवन है चलने का नाम" एवं सुश्री समता खानचंदानी की "तीन लघु कहानियाँ" प्रशंसनीय है ।

आशा करती हूँ कि पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्कमता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी ।

सधन्यवाद !

भवदीया,

ह/-
वरिष्ठ लेखाधिकारी/हिंदी कक्ष





26 जनवरी 2022





15 अगस्त 2022



हिंदी पखवाड़ा 2021 समापन समारोह



रणजी ट्रोफी विजेता टीम के कार्यालय के ओपनिंग बल्लेबाज़





